पंच पुष्प

लिपि प्रकाशन

पंच पुरुष

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

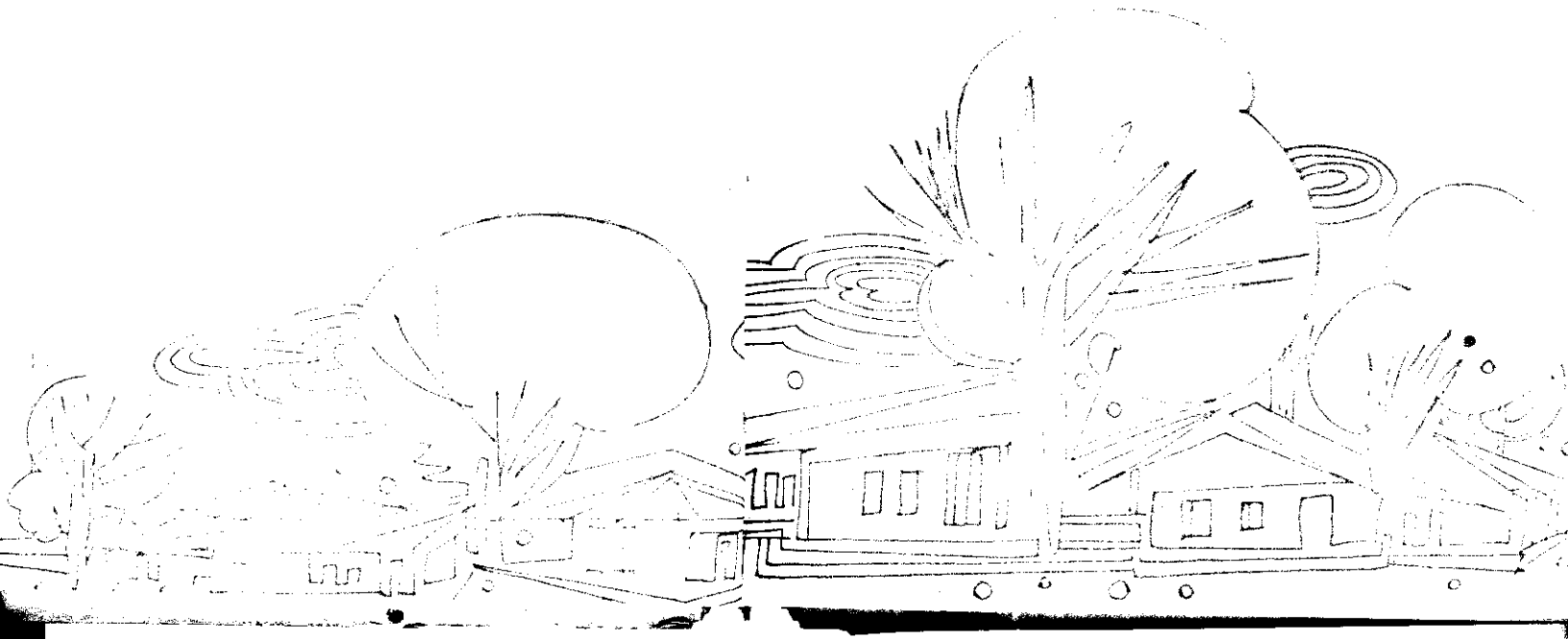

© डा० लक्ष्मीनारायण लाल

इस नाटक का सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति और उसकी देय-रायल्टी के बिना नाटक की मंच-प्रस्तुति अथवा किसी भी रूप में इसका उपयोग गैरकानूनी होगा। अनुमति के लिए पत्र-व्यवहार का पता। डा०लक्ष्मीनारायण, 8/17, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली-110008

मूल्य : आठ रुपये

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 1978

प्रकाशक
लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002,

मुद्रक : साधना प्रिंटर्स, दिल्ली-32

PANCH PURUSH (Play)
By Dr. Laxmi Narain Lal Rs. 8.00

प्रस्तुत नाटक

कुछ वर्ष पहले श्री वंशीकौल के निर्देशन और संचालन में आगरे के जन नाट्य के तत्त्वावधान में एक नाट्य शिविर हुआ था। उसमें मेरा एक लिखा जाता हुआ नाटक, जिसका तब मैंने नाम दिया था 'संस्कार ध्वज' प्रशिक्षण और प्रयोग के स्तर पर खेला गया था। तब वह नाटक का पहला 'ड्राफ्ट', पहला स्वरूप था। उसे खेलने-देखने की प्रक्रिया में और उसके बाद मैं उसे अन्तिम रूप देने में उस पर लगातार कार्य करता रहा। तब से पांच बार उस नाटक को एक के बाद दूसरा लिखता रहा। और अब इसे पूरी तरह से बिलकुल नया नाट्य रूप दे पाया हूं।

नाटक लिखा नहीं जाता, रचा जाता है। मंच की कसौटी पर चढ़कर नाटक स्पष्ट यह बता देता है कि अपने शिल्प और कथ्य में कहां और कितना शक्तिहीन और असफल है, तथा किस तरह से उसे दुबारा-तिबारा लिखकर शक्तिपूर्ण और सफल बनाया जा सकता है। यही है नाटक का रचा जाना।

अब यह नाटक अपने अन्तिम रूप में रचकर अपने कथ्य और शिल्प में संपूर्ण हो गया है। आशा है, नाट्य प्रेमियों को यह पूर्ण संतोष और नया उत्साह देगा।

—लक्ष्मीनारायण लाल

पुरुष पात्र

बाबा	बीपत
उत्तमा	शेख मौला
ठाकुर	पुजारी
वीरसिंह	जगमग
कन्हाई	पंचम
बाकुल	गोबर

स्त्री पात्र

ठकुरानी	मैना
गंगाजली	गोपी
माटी	

पंच पुरुष

पहला अंक

पहला दृश्य

[मंच की दाईं ओर गांव का चबूतरा। पृष्ठभूमि में ग्राम पंचायत का चुनाव हो रहा है। तरह-तरह के बाजे बज रहे हैं। लोग बातें करते हुए आते हैं।]

जगमग : जभी तो पंचानन बाबा कह रहे थे—ऐसी दशा में ग्राम पंचायत का चुनाव मति करो। यह चुनाव नहीं डाकाजनी है—जिसकी लाठी उसकी भैंस! इस मारकाट, दुश्मनी, वैर-विरोध से जो पंचायत बनेगी वह किस काम की होगी?

पंचम : पर सरकार का हुकुम जो था।

जगमग : सरकार तो दिल्ली में बैठी है। उसे क्या पता गांव में क्या-क्या हो रहा है। गांव है भी कहीं अब! अरे यह गांव था, बाबा परबाबा के जमाने में, जब यहां अंगरेजी राज नहीं आया था। पंचानन बाबा बताते हैं—तब पंच परमेश्वर होते थे, हां। आज की तरह नहीं कि बाकुल सिंह बंदूक और लाठी की ताकत से जितना वोट चाहें उतना गिरा लें, जोर जबरदस्ती। देखो न, पंच का चुनाव हो रहा है कि चोर डाकू बेईमान का!

कन्हाई : सब चाहते हैं ताकत—ताकि दूसरों को दबा सकें—सब उसी

ताकत का चक्कर है। भीतर तो कुछ है नहीं। (**चबूतरे के पास बैठता है।**)लगता है हमारे भीतर भी कुछ नहीं बचा है।

पंचम : अरे पंचानन बाबा आ रहे हैं। (**आते हैं**) राम राम बाबा, वोट डालि आए ?

बाबा : एक ओर ठाकुर ब्राह्मन, दूसरी ओर कुर्मी अहीर, तीसरी ओर हरिजन, चौथी ओर शेख पठान—मैंने पूछा—कहो भइया, मैं किस गड्ढे में गिरूं ? सब के बाजे अलग-अलग बज रहे हैं। मैंने कहा—यह बाजा काल बजा रहा है। अभी तो कुल चार हैं, पर चुनाव के बाद एक में चार होओगे—फिर सौलह से चौरासी—कुल चौरासी घर हैं न इस गांव में। (**चबूतरे पर बैठते हुए**) मैंने कहा—मैं किसी को अपना वोट नहीं दूंगा।

[बाबा के साथ सब गाते हैं।]

उगहु सुरुज रे, उगहु सुरुज रे
तुम बिनु जग अंधियार।
सोने के गेड़ुआ गंगाजल पानी
अछत बिरिया हार।
हाथ जोरि करूं बिनती
देहु अपन उजियार—
तुम बिनु जग अंधियार।
गंगा पैठि बाबा सुरुज से बिनऊं
तुम बिनु जग अंधियार।
उगहू सुरुज रे, उगहु सुरुज रे···।

बाबा : हमने तब उत्तमा की बात नहीं मानी।

जगमग : उत्तमा हमें छोड़कर चला गया।

बाबा : अरे हमीं सबने उत्तमा को छोड़ दिया। उसका अपमान किया। हमीं ने उसे गांव से खदेड़ दिया। वह सच कहता था—हर चीज अपने धर्म पर टिकी होती है—धर्म माने व्यवस्था—व्यवस्था माने आचरण। एक थी गांव की अंगरेजों से पहले

की व्यवस्था, फिर उसे खत्म कर आई अंगरेज की जमींदारी व्यवस्था। जमींदारी व्यवस्था टूटी, उसकी जगह हमें अपनी नई व्यवस्था चाहिए। सब कुछ के बावजूद गांवों में जो इतनी उदासी, फूट, वैर-विरोध है, उसका एक ही कारण है—यहां कोई व्यवस्था नहीं।

जगमग : ग्राम पंचायत क्या वह व्यवस्था नहीं बाबा ?

बाबा : पूरा गांव जब एक समुदाय हो—एक परिवार की तरह, तभी तो पंचायत होगी—तभी तो पंच परमेश्वर होंगे। नहीं तो देखो न, पंचायत चुनाव में क्या हो रहा है···।

कन्हाई : अरे रे रे ! फिर लाठी चल गई बाकुल सिंह और मनोहर में।

जगमग : कुशल हुआ, पुलिस आ गई बीच में।

पंचम : पुलिस न होती तो कई कतल हो गए होते अब तक !

जगमग : क्या मतलब है इस पंचायत चुनाव का ! अठारह साल से पंचायत नहीं बनी थी, तो कौन-सा पहाड़ टूट गया था !

बाबा : पहाड़ तो तभी टूटा था कांग्रेस राज में जब पहली बार पंचायत बनी थी। जो भ्रष्ट राजनीति ऊपर थी, वही यहां तक फैल गई आकाशबेल की तरह ! देखो न, पंच चुनाव का अखाड़ा इधर लड़ा जा रहा है, उधर बाजे बज रहे हैं काली-थान पर, डीहबाबा के चौरा पर।

जगमग : भला दोनों में क्या सम्बन्ध है बाबा !

बाबा : बाजा तो वही पुराना है—जब यह पूरा गांव एक परिवार जैसा था। और यह चुनाव का नया अखाड़ा आजादी के बाद का है। वह पुराना कहीं नहीं है, पर उसके खंडहर अब तक हैं। वह पुराना ही आधार है, तभी उसकी जाने-अनजाने याद आती है।

जगमग : चुप क्यों हो गये बाबा ?

बाबा : वही तुम्हारी पहाड़ टूटने वाली बात सिर में टकरा रही है। कभी देखा है टूटा हुआ पहाड़ ? सुना है मैंने अपने पिता से। वह पैदल बद्रीनाथ धाम गए थे। वह बताते थे गंगोत्री के पास

पहाड़ टूटकर गिरा था—भयंकर विकराल था वह दृश्य, बताते-बताते रो पड़े थे।···दूसरी बार फिर रोये थे—मरने से पांच दिन पहले—रो रोकर कहने लगे—अरे पंचानन बेटा, पहाड़ तो अपने गांवन में भी टूटा, लार्ड कार्नवालिस का वह इस्तमरारी बंदोबस्त। जहां सबै भूमि गोपाल की थी, जो गांव की धरती माता थी, सबकी समान, वह उसके हाथों काट-पीट कर बिक गई, जिसने उसे खरीदा।

जगमग : अच्छा बाबा, तब यह जमीन किसी की नहीं थी ?

कन्हाई : किसी की मिल्कियत नहीं ?

पंचम : तू चुप रह, बात समझन दे !

बाबा : अरे सबको समझने दो, एक दो के समझने से कुछ नहीं होगा।

जगमग : हां बाबा !

बाबा : यह पूरी जमीन, खेत, बाग बगीचे, पोखर कुआं गांव की यह सारी धरती पूरे गांव की थी। पूरा गांव एक परिवार था—एक समुदाय। जन्म के आधार से जाति नहीं थी, काम धंधा के मुताबिक थी। खेती करने वाला गृहस्थ ही जजमान था बाकी सारा गांव उसके पुरोहित थे। ब्राह्मण, कुम्हार, तेली, नाई, जुलाहा, धोबी, दर्जी, लोहार, बढ़ई, चर्मकार, धुनिया, माली सब पुरोहित थे। यह एक पूरी व्यवस्था थी—जैसी भी थी, पर पूरी थी और इसी मिट्टी से उपजी थी। अंगरेजी राज ने इसे तोड़ दिया—जैसे कोई एक पूरा पहाड़ टूट जाए, जैसे एक पूरा संगीत टूट जाए और एक गहरी उदासी, निराशा छा जाए।

[सूप पर नाखून चलाकर संगीत के साथ चनैनी गा पड़ता है—लोग साथ देते हैं।]

डिहवा लै गै डबरवा ना
डिहवा कै मरिगै मसनवां ना।
गउवां में आवै जमीदरवा ना
गउवां में आवै ठकुरवा ना।

जेकरे सरन डारी डेरवा ना
दिनवां सुरुज करै जोतिया ना।
गावां के लोगे गंवड़िया ना
मरि मरि सहैं गरिबिया ना।
ठाकुर के आवै लसकरिया ना !

[गायन चल रहा है दृश्य बदलता है।]

दूसरा दृश्य

[काठ के घोड़े पर बैठा हुआ ठाकुर राजा आता है। उसके पीछे-पीछे बंदूक लिए सिपाही।]

ठुमुकि ठुमुकि चलै घोड़वा ना
घोड़वा के पीछे सिपहिया ना।
हें हें हें हें हें
हें हें हें हें हें।
ठाकुर चढ़ल आवै घोड़वा ना
ठाकुर की अंखिया में रजवा ना।

सिपाही : हैय हैय ! चुप्प रहो, चोप्प ! गांव गोप्प !

ठाकुर : हें हें हें हें ! इन्हें बता दो मैं कौन हूं !

सिपाही : अरे उठकर सलाम करो, सलाम। तीन कोस पूरब, ढाई कोस पच्छिम, दो कोस उत्तर, चार कोस दक्खिन—इतने गांव जवार, जमीन जायदात के राजा जमींदार को करो प्रणाम, अंगरेज बहादुर के खास खैरख्वाह, देखो क्या है रूप, क्या है तेज, क्या है प्रताप, बाप रे बाप !

सब : धन्य धन्य राजा प्रताप—तू ही माई तू ही बाप।

ठाकुर : क्या कहा हमारी समझ में कुछ नहीं आया !

सिपाही : आप हैं अंगरेजों के बनाए नये राजा, ये हैं प्रजा पुरानी। इनकी भाषा आप न समझें, आपकी भाषा ये न बूझें—तभी

तो राज चलेगा। तभी तो राज चलेइगा। तभी तो राज चल्लैइगा !

ठाकुर : वीरसिंह !

सिपाही : समझ लो मेरा नाम वीरसिंह है···जी सरकार, धर्मावतार !

ठाकुर : मेरी चीठी लिखो अंगरेज बहादुर के नाम—जिला कमिश्नर सर विलियम लारेंस—साहब बहादुर को मालूम हो कि अपनी पूरी जमींदारी में आज मैंने अपना दौरा पूरा किया। दौरा बड़ा कामयाब रहा। यह सही है कि यह सारा इलाका अपनी इतनी उपजाऊ जमीन के बावजूद अकाल और भुखमरी का शिकार है। गांव के लोग बेकारी औ' गरीबी से बीमार हैं। पर हैं यहां के लोग हट्टे कट्टे और सीधे सादे। इनके भीतर तमाम ताकत सोई है, बस उसे किसी बहाने से जगाकर काम लेने वाला चाहिए। ये प्रजा हैं, इन्हें कोई राजा चाहिए। आपकी मेहरबानी से मैं यहां राजा बनकर पहुंच गया। अब इस पूरे इलाके को अपनी ताकत और तरकीब से सम्हाल लूंगा। ये आलसी, संतोषी, अंधविश्वासी हैं, इन्हें किसी का भय चाहिए। कोई इन्हें किसी काम में जोतकर हांकने वाला चाहिए। ये भाग्य के खूंटों में बंधे हुए पशु समान हैं—इन्हें एक दंड चाहिए। कितना आसान है इन पर राज करना, इनसे अपना उल्लू सीधा करना।

वीरसिंह : (पान देते हुए) धर्मावतार, उल्लू सीधा करना यह मुहावरा अंगरेज बहादुर के पल्ले नहीं पड़ेगा—क्योंकि उल्लू तो सीधे होते ही हैं यह देख लिया उन्होंने। ओ रे, सम्हाल राजा की पीक। सम्हालता है कि नहीं, बेवकूफ कहीं का !

[राजा की पीक को चकई अपने अंगोछे में लेता है। डरे हुए गांव के लोग आते हैं।]

जगमग : दुहाई धर्मावतार की !

मौला : गरीब परवर, मेरे वालिद यह रटते-रटते मर गए कि जब से इस्तमरारी बंदोबस्त हुआ गांव अपना मालिक नहीं रहा।

शुक्र है—इतने दिनों बाद आप हमें मालिक मिले। खुदा आपका राज हम पर कायम रखे !

पंचम : हम सब अन्न पानी बिना मर रहे हैं···।

बाकुल : भगवान ने आपको यहां भेजा।

पुजारी : मैं कह रहा था, काल का कोप है, पर कौन माने मेरी ! जिस घड़ी प्रजा को राजा मिलेगा, काल कोप समाप्त हो जाएगा। यत्र राजा सुखी, तत्र प्रजा सुखी। जै हो महराज की !

बाबा : ऐ सावधान, राजा की अगाड़ी, घोड़ा की पिछाड़ी।

पुजारी : अरे चुप रहो पंचानन मिसिर, राजा का घोड़ा जिस ग्राम में पैर रखे, वह ग्राम नहीं तीर्थधाम हो जाएगा, हां ! अरे देखते क्या हो, घोड़े का पैर दबाओ। राजा को पंखा करो !

[दो लोग घोड़े के पैर दबाते हैं। घोड़ा बिगड़ता रहता है। दो लोग धोती पकड़कर पंखा करते हैं।]

ठाकुर : मैंने खुद जांच-पड़ताल की है—यहां की जमीन बहुत उपजाऊ है। पानी में ताकत है। लोग जानदार हैं। बड़े काम लायक।

पंचम : सरकार घोड़े से उतरिए हम आपके लिए आसन लाते हैं।

जगमग : हम आपके लिए फल-फूल लाते हैं।

पुजारी : पीने को गंगाजल।

ठाकुर : देखो जरा-सी तारीफ की नहीं कि पूंछ हिलाने लगे। तुम लोग अव्वल दर्जे के काहिल हो। भगवान तुम लोगों से नाराज है—तभी यह अकाल पड़ा है। भगवान को प्रसन्न करने के लिए इस गांव में ठाकुर जी का एक मन्दिर तुम लोगों के हाथों बनेगा—तभी सबका कल्याण होगा।

[ठाकुर की बात का अन्तिम अंश वीरसिंह दुहराता है।]

सब : हम सब तैयार हैं।

पंचम : यह तो बहुत अच्छी बात है।

बाकुल : सभी का कल्याण है।

पुजारी : हमें आप ही जैसा धर्मात्मा पुरुष चाहिए था। आपकी दया से

हम सब का कष्ट दूर होगा। **(पत्रा देखते हुए)** सूर्य उत्तरायण है। आषाढ़ सुदी पंचमी का मुहूर्त शुभ है। अगले गुरुवार को दो घड़ी सोलह पल, तेरह विपल पर सूर्या नक्षत्र का योग है—उसी दिन प्रातःकाल ठाकुर जी के मन्दिर की नींव दी जाए !

ठाकुर : कौन है यह ?

पुजारी : ब्राह्मण पुजारी। इस गांव का पुरोहित !

बाबा : पहले जो खेती-गृहस्थी करता था, वही था जजमान बाकी गांव के सारे पौनी परजा पुरोहित होते थे। अब केवल नाम-मात्र का यही ब्राह्मण पुरोहित रह गया—तभी तो गांव की यह दुर्दशा हुई।

ठाकुर : वह पुरानी व्यवस्था थी जो दम तोड़ चुकी। अब राजा बहादुर की जमींदारी की नई व्यवस्था में देखना, गांवों में बहार आ जाएगी।

पुजारी : सत्य वचन, क्योंकि बुद्धि नहीं, संतोष ही इनका धर्म है। बचपन से बड़े होने तक समान गति से चलना। कोई चलावै, तभी ये चलेंगे। वरना सीधी लकीर के फकीर। खुद कोई परिवर्तन नहीं चाहेंगे। सोचने की कभी कोई आदत नहीं पड़ी। जो आया, भाग्य को मानकर आंख मूंदे चल पड़े। पुराने संस्कारों के गुलाम। जो इन्हें खींच ले जाए, उसी के झुंड में। स्मरण शक्ति ज्यादा तेज नहीं। मामूली-सी बात पर अड़ जाना। हद दर्जे के भावुक—बात-बात में डर जाना, गुस्से में कांपने लगना। जैसे दलदल जमीन होती है···।

बाबा : चुप हो जाओ पुजारी—जिस दिन से ब्राह्मण चाटुकार हुआ तभी तो यह सत्यानाश हुआ।

पुजारी : देखिए धर्मावतार, यह कटु वचन !

ठाकुर : ठीक है—ठाकुर मन्दिर के पुजारी तुम्हीं होगे। जाओ, देवस्थान की नींव डालने का प्रबन्ध करो। धन और साधन से भरी बैलगाड़ियां आ रही हैं। वीरसिंह !

वीरसिंह : धर्मावतार !

ठाकुर : घर-घर में अनाज बंटवाओ। कूएं खुदवाओ, ठाकुर मन्दिर के काम में पूरे गांव-जवार को लगवाओ। मेरे लिए पक्की हवेली बनाओ।

[बाबा गाता है, शेष लोग भी उसे गाते हुए चले जाते हैं।]

पुरवा से आवै राजा ठाकुर सवरिया
पछुआ से आवै अंगरेज अल्ला हो मियां !
पुरवा से आवै राजा तेग तलवरिया
पछुआ से आवै बड़की तोप अल्ला हो मियां ! ···

[उस चबूतरे पर अकेला बाबा रह जाता है।]

बाबा : सचमुच सोया हुआ गांव जैसे धीरे-धीरे जगने लगा। जैसे-जैसे ठाकुर मन्दिर बनने लगा, लोगों में न जाने कहां का उत्साह, न जाने कितना पुरुषार्थ पैदा हो गया। पहले काम ही पूजा थी, घर-घर में व्यवसाय और उद्योग, ग्राम देवता की सामुहिक पूजा। अब काम अलग, पूजा अलग। पहले हर घर में भगवान का निवास था अब केवल ठाकुर मन्दिर में ठाकुर भगवान···। मन्दिर का काम बड़ी तेजी से पूरा हो रहा था···।

तीसरा दृश्य

[ठाकुर मन्दिर बनने का काम जोरों से चल रहा है। पृष्ठभूमि से श्रमरत स्त्रियों का गायन सुनाई दे रहा है।]

कौने बन उपजै सुपरिया कौने बन नरियर,
रामा केहि बन चुअत गुलाब से चुनरी रंगऊबै।
बाबा बन उपजै सुपरिया ससुर बन नरियर
पिया बन चुअत गुलाब सो चुनरी रंगउबै।

[माटी अपनेबेटे बीपत को लेकर आती है।]

माटी : अरे आदमी बन जाएगा। काम नहीं करेगा तो खाएगा क्या रे? जा जा काम कर। आंखें फूटी हैं तेरी, देख सारा गांव-जवार मन्दिर के काम में लगा है। अरे इस काज में धरम है, ऊपर से मजदूरी भी है। चार आने रोज। अब तक कहीं एक आना भी नहीं मिलता था।

बीपत : मोसे इतनी मेहनत का काम नाहीं होई।

माटी : तो आ अपने हाथ में मेरी चूड़ी पहन ले।

बीपत : काका तो गए है काम पर।

माटी : अरे बकर-बकर मत कर दहिजरा का पूत! सारा गांव काज करेगा तू जवान पट्ठा बैठकबाजी करेगा रे मुंहझौंसा।

बीपत : जब देखो बस काम काम। कहां से आया यह ठाकुर हराम!

माटी : चुप रह, दहिजरा का पूत। दइया रे दइया, कहीं सुन लिया तो उल्टा टंगवा देगा पेड़ पर। अरे ठाकुर बाबू आए तभी न इतने काम लगा दिए, नाहीं तो यहां काम ही कौन कराता था? जा, जा, काम कर।

बीपत : अच्छा आज नाहीं कल।

माटी : अच्छा रुक, बुलाती हूं! सिपाही, ओ सिपाही!

बीपत : चुप रह, क्या करती है। उसी के मारे तो मैं काम पर नहीं जाता।

माटी : जा, जा। अच्छी तरह मन लगाकर काम करना। परसाद मिलेगा। पैसे मिलेंगे। घर बन जाएगा। तेरी शादी हो जायगी।

बीपत : सच माई, मेरी शादी हो जाएगी?

[वीरसिंह आता दिखाई पड़ता है।]

वीरसिंह : ओरे, तू अब तक यहां खड़ा है। जाता है कि मारूं दो डंडे···।

[बीपत भागता है।]

माटी : साहेब, आपका नमक खाया है, भला काम क्यों नहीं करेगा? सो भी धरम का काम।

[वीरसिंह सिर पर पगड़ी बांध रहा है।]

माटी : बाबू, अपने लिए एक साड़ी मांगी थी। हुकुम हुआ?

वीरसिंह : जाकर मालिक से क्यों नहीं कहती?

माटी : हमरे कहे का होगा बाबू? आप ही दया करो। बाबू साहेब, जिस गांव में मालिक ठाकुर के पांव पड़ते हैं, जगमग हो उठता है। अपनी-अपनी गोड़ी है! लोगों के आपसी झगड़े मिटवाए। जनम-जनम के वैर धो दिए। समझा बुझा कर लोगों के घर बसाए। खुले घरों में छान छप्पर छवा दिए। हमारी चमर-टोलिया में मालिक के पैर पड़ जाते, हमारे दिन भी लौट आते, हां सरकार!

वीरसिंह : अरे धीरे-धीरे सब हो जाएगा। अभी तो कुल छः महीने हुए ठाकुर मालिक को यहां आए। बस मन्दिर का काम अब पूरा ही होने को है। (**यकायक**) अरे ओ, कौन जा रहा है उधर मुंह छिपाए? चल इधर। काम चोर कहीं का! कहां भागा जा रहा है? अरे, यह तो सुनता ही नहीं।

माटी : अरे यह तो उत्तमा हैं—पढ़ने जा रहे हैं।

वीरसिंह : क्यों रे, तुझे पढ़ाई सूझी है—सारा गांव-जवार ठाकुर जी के काम-काज में लगा है।

उत्तमा : मैं भी अपने काम-काज में लगा हूं। पढ़ने जा रहा हूं।

वीरसिंह : जमींदार राजा ठाकुर को जानता है कि नहीं?

उत्तमा : भेंट हो चुकी है। उन्हें पता है मैं रोज पांच कोस दूर शहर पढ़ने जाता हूं।

वीरसिंह : क्या पढ़ता है?

उत्तमा : मुझे देरी हो जाएगी।

वीरसिंह : मेरे सवाल का जवाब क्यों नहीं देता—क्या पढ़ता है?

उत्तमा : संस्कृत पाठशाला पास कर अब हाई स्कूल में पढ़ता हूं—साहित्य, इतिहास, भूगोल।

वीरसिंह : किसका लड़का है?

माटी : गजाधर शुकुल के।

वीरसिंह : गजाधर शुकुल भी कोई काम-धाम नहीं करता। इनका गुजारा कैसे होता है ?

माटी : भगवान करता है गुजारा—बड़े धर्मात्मा पुरुष हैं।

वीरसिंह : यह तो बड़ा चुप्पा है : क्यों रे, मुझे जानता है ? अरे बोलता क्यों नहीं।

उत्तमा : मुझे स्कूल पहुंचने में देरी हो रही है।

वीरसिंह : बड़ा किस्सा बुझाता है। तुझे कोई डर नहीं ?

उत्तमा : कैसा डर, किससे, क्यों ?

वीरसिंह : अच्छा, वाह बेट्टा !

उत्तमा : अपना काम देखो मुझे अपने रास्ते जाने दो।

वीरसिंह : अरे यही तो मेरा काम है—पूरे गांव को काम में लगाना।

उत्तमा : पर मेरा काम है अपने आपको अपने काम में लगाना।

[जाता है।]

वीरसिंह : अरे रे रे · कौन जा रहा है उधर। इधर आ (**पंचम आता है।**) काम छोड़कर किधर जा रहा है ?

पंचम : ठाकुर जी की कृपा से आखिर पानी बरसा ना—खेत जोतने जा रहा हूं अपना, नहीं तो ठाकुर को मालगुजारी, भेंट-नजराना कहां से दूंगा।

वीरसिंह : बड़ा होशियार है। खूब मेहनत से खेती करो। इस साल तिगुनी पैदावार न हो तो कहना।

पंचम : सब ठाकुर जी की कृपा है।

[जाता है।]

वीरसिंह : चल, खड़ी मुंह क्या देख रही है, आज मंदिर की छत पड़ने जा रही है।

माटी : जै हो ठाकुर बाबा की !

[दोनों जाते हैं। बाबा और बाकुल आते हैं।]

बाबा : बड़े खुश हो बाकुल !

बाकुल : अब तो मोंछ पर ताव है ! ठाकुर के राज में बाकुलसिंह भी छोटे राजा !

बाबा : ठाकुर की हवेली भी बनकर तैयार हो गई।

बाकुल : भीतर नक्काशी का काम अभी पूरा नहीं हुआ है। सवा सौ कारीगर लगे हैं।

बाबा : ठाकुर की हवेली और ठाकुर का मंदिर इन दोनों में कोई फर्क है क्या ?

बाकुल : अरे, एक धर्मस्थान दूसरा कर्मस्थान !

बाबा : (**हंसी**)

बाकुल : तुम्हें दोनों में कोई फर्क नहीं दीखता ?

बाबा : नहीं।

बाकुल : देखो, मंदिर में छत पड़ने जा रही है—ऐसे समय अधर्म की बातें मत करो।

बाबा : सत्य कहना अधर्म है ?

बाकुल : चुप रहो ! मैं ठाकुर राजा के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकता।

बाबा : क्योंकि तुम भी ठाकुर हो। एक ठाकुर के आ जाने से सारा गांव अब अलग-अलग जातियों में बांट दिया गया।

बाकुल : पहले भी जातियां थीं।

बाबा : जातियां थीं, कर्म और व्यवसाय के अनुसार। जातियां थीं, पर जातियों में अलग-अलग बंटे नहीं थे हम। सारा गांव, यहां की खेती-बारी यज्ञ भूमि की तरह थी। कृषक यजमान था, शेष सारे लोग पुरोहित थे। अब पुरोहित केवल ब्राह्मण है—वही ब्राह्मण जो ठाकुर का पुजारी है। गांव का हित अब केवल ठाकुर-जमींदार देखेगा। पहले के सारे पुरोहित अब जमींदार के नौकर-चाकर और गुलाम होंगे—फिर गांव कहां जाएगा ?

बाकुल : ये बातें अगर ठाकुर राजा के कानों में पड़ीं तो भला नहीं होगा।

बाबा : मेरा भला न होगा !

बाकुल : तुम बीते हुए जमाने की बातें कर रहे हो। देखो न, ठाकुर के साथ नया जमाना आते ही सब बदल रहा है।

बाबा : हां, यही तो, सब बदल रहा है।

बाकुल : तो इस नये को स्वीकार करो। देखो मंदिर की छत पड़ रही है।

[दोनों के हाथ जुड़ जाते हैं। काम करती हुई स्त्रियां गा रही हैं।]

यहि ठइयां मोतिया हेराइगै हो रामा,
कहां लग ढूंढूं।
कोठवां पै ढूंढ़ेऊं अटारिया पै ढूंढ़ेऊं
ढूंढ़ि आइऊं सैया की सेजरिया हो रामा,
कहां लग ढूंढूं।
सासु जी से पूछेऊं ननद जी से पूछेऊं
सइयां से पूछत लजाय गयऊं रामा
कहां लग ढूंढूं···

चौथा दृश्य

बाबा : ठाकुर मन्दिर बनकर पूरा हुआ। मथुरा, अयोध्या और काशी से भगवान की मूर्तियां बनकर आईं। तब से गांव में कई भरपूर फसलें कटी हैं—रबी, चैती, अगहनी। इतना अन्न तो कभी हुआ ही नहीं। पर अब जिसके नाम खेत, उसी का वह अन्न। खेत जोतने वाला अब खेत का मालिक नहीं, खेत के मालिक का नौकर हो गया, मालिक वही जो काम न करे—जो काम करे वह शूद्र—वह मालिक का दास, एक छूत एक अछूत, एक ऊंचा एक नीचा—यह नया अनुभव था उस नई व्यवस्था का।

[दृश्य उभरता है—पुजारी आते हैं।]

बाबा : पायं लागी पुजारी जी !

[गांव के लोग आते हैं।]

पुजारी : जै हो, कल्याण हो। अरे अगले मंगलवार को भगवान की मूर्ति-प्रतिष्ठा हो रही है। राम और कृष्ण, ठाकुर के दोनों स्वरूपों की प्राण-प्रतिष्ठा होगी।

बाबा : अरे पवनसुत हनुमान जी भी होंगे न ?

पुजारी : अरे भला उनके बिना कैसे पूरा होगा। अपने सिधु ठाकुर तो विलक्षण आदमी हैं। ऐसा धर्मात्मा, कला मर्मज्ञ, प्रजापालक तो देखा ही नहीं। मन्दिर में अपने हाथों दशावतार आंके। एकदम साक्षात्। सजीव। थवई, मिस्त्री, कारीगर सब सन्न रह गए। कहीं पर राम रावण युद्ध, कहीं महाभारत का दृश्य। गोपाल जी के लिए दीपदान देखो, कितनी सुन्दर छवि है। एक गोपी के सिर पर स्वर्ण का दीपक। राम कृष्ण की आरती सामग्री रखने के लिए हल्दी की काठघानी। बाप रे बाप इतनी बड़ी हल्दी की एक गांठ। ठकुरानी नैहर से अपने साथ ले आई हैं।

बाकुल : ठकुरानी आ गई ?

पुजारी : और नहीं तो क्या ? सात नौकर, तीन नौकरानियां, सोलह कहारों की पालकी पर आई हैं। सोलह घोड़े, बारह हाथी की लश्कर आई है साथ।

बाबा : अभी हवेली तो पूरी बनी भी नहीं, कहां रहेंगी ठकुरानी, इतने लाव-लश्कर के साथ ?

बाकुल : अरे बड़े मस्तमौला हैं ठाकुर।

पुजारी : अरे उनसे बढ़कर हैं ठाकुरानी। परदा नहीं करतीं, हां। पालकी का ओहार दरवाजा पर उठा हुआ था। जरा भी गरमी बर्दाश्त नहीं कर सकतीं। चन्दन चोवा लगाती हैं।

कन्हाई : बहुत सुन्दर होंगी !

बाकुल : चुप रह !

पंचम : हमें ठकुरानी देखने को मिलेंगी ना ?

बाबा : अरे प्रतिष्ठा पूजा में ठकुरानी भाग लेंगी ?

पुजारी : और नहीं तो क्या, उन्हीं के साथ तो ठाकुर पहली पूजा करेंगे

मन्दिर में। सारी तैयारी हो रही है। पूरा गांव सजाया जाएगा। सबको नए वस्त्र-आभूषण दिए जाएंगे। अन्न दान होगा। भोज-भंडार सबके लिए खोल दिया जाएगा। दूर-दूर से पंडित, विद्वान, मेहमान आ रहे हैं। लीला मंडली, नर्तक-गायक आएंगे। संगीत-गान छा जाएगा इस धरती पर। सारे बाजे-गाजे बजेंगे। सारी प्रजा उत्सव मनाएगी।

[कहते हुए तेजी से चले जाते हैं।]

बाबा : ठाकुर मन्दिर का इतना महातम ?

बाकुल : अरे धर्म ही तो मूल आधार है राजा-प्रजा सम्बन्ध का।

बाबा : पर यह तो एक मन्दिर है। ऐसे तो बहुतेरे देवस्थान हैं।

बाकुल : सुनो मैं क्षत्री हूं। वही जमींदार रक्त मुझ में भी है। चाहे भगवान राम और कृष्ण हों, चाहे महावीर और बुद्ध, सब क्षत्री घरों में पैदा हुए हैं। ठाकुर मन्दिर हमारे प्रताप की निशानी है।

बाबा : फिर यह धर्म स्थान कहां से होगा ? यह तो अहंकार की निशानी होगी।

बाकुल : अहंकार ही तो मूल है, उसके बिना कहीं कुछ होता है ? सिन्धुसिंह के अहंकार ने उसे यहां का ठाकुर राजा बनाया। उसी ने यहां की सोई हुई प्रजा को जगाकर इतना कमाल कर दिखाया। (**रुक कर**) इस जीवन के चार फल होते हैं—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। क्षत्री राजा के सिर्फ तीन फल होते हैं—धर्म, अर्थ और काम। सो ठाकुर मन्दिर से उस धर्म का फल शुरू हो गया, अर्थ और काम इसी रास्ते में हैं।

बाबा : ओ हो, तो यह रहस्य है।

बाकुल : रहस्य क्या सच्चाई है। इसमें छिपाने को क्या है ? जब राम को हमने राजा मान लिया, तो हर राजा हमारे लिए राम हो गया।

बाबा : बाकुल ! तुम ठाकुर के पक्ष में हो या···?

बाकुल : बिलकुल ठाकुर के पक्ष में हूं—मतलब अपनी जात के पक्ष में

हूं। अपने पक्ष में हूं।

[माटी आती है।]

माटी : अरे सुना बाबू। कल से यहां रामलीला होगी। ठाकुर राजा खुद रामलीला कराएंगे। गजाधर पंडित के पूत उत्तमा को राम चुना गया है। बाकुल बाबू आप लच्छिमन बनेंगे।

बाकुल : राम के लिए उत्तमा चुना गया है, और मैं लक्ष्मण ? राम क्षत्रिय थे।

बाबा : अरे यह तो लीला है बाकुल।

माटी : ठकुरानी खुद सीता बनेंगी। और रावण बनेंगे खुद राजा ठाकुर।

बाकुल : अच्छा ? फिर तो रामलीला जमेगी खूब।

माटी : मथुरा, काशी, अयोध्या से समाजी आय गए हैं।

[वीरसिंह आता है।]

वीरसिंह : अरे तुम लोग यहां क्यों बैठे हो। सारे गांव के लोग सजबज रहे हैं। आप सब को दरबार में बुलाया गया है। कल सुबह से ही मन्दिर में भगवान प्रतिष्ठा का आयोजन शुरू होगा। सारी प्रजा को इनाम-इकराम बंटेगा। रामलीला शुरू हो रही है। बाकुलसिंह, आप लक्ष्मण बनेंगे। ठकुरानी खुद सीता के रूप में लीला में भाग लेंगी। राजा ठाकुर रावण बनेंगे। बाबा रामबोला, तुम्हें भी कोई पार्ट करना होगा।

बाबा : क्यों नहीं, जो मालिक की आज्ञा होगी खुशी से करूंगा। आखिर भगवान की लीला है। लीला में आप क्या बनेंगे ?

वीरसिंह : लीला का मैनेजर मैं ही बनाया गया हूं।

बाकुल : पर गजाधर के लड़के उत्तमा को राम क्यों बनाया गया ? इसके लिए कोई क्षत्री युवक चाहिए था।

वीरसिंह : उत्तमा से मिलकर राजा ठाकुर बहुत प्रसन्न हैं। ठाकुर ने उसके साथ शास्त्रार्थ किया। उत्तमा को हिन्दी, संस्कृत और अंगरेजी तीनों का ज्ञान है। रामायण, राम, सीता, रावण, लक्ष्मण, सबके बारे में बड़ी मर्म की बातें बताता रहा। ठाकुर

ने प्रसन्न होकर खुद उसके पांव छुए और घोषणा की—उत्तमा ही लीला का राम होगा।

बाबा : धन्य हो। जब तक लीला चलेगी, उत्तमा को राम मानना होगा।

बाकुल : कितने दिनों बाद फिर इस धरती पर रामलीला होगी।

वीरसिंह : विलम्ब हो रहा है।

[सब जाते हैं।]

दूसरा अंक

[उत्तमा का घर। प्रातःकाल का समय। दूर से ठाकुर मन्दिर का संगीत उभरता हुआ आ रहा है। उत्तमा जमीन पर पाल्थी मारकर बैठा कोई धर्मग्रंथ पढ़ रहा है। नैवेद्य लिए पुजारी आता है।]

पुजारी : देवभद्रा पुराण में लिखी भविष्यवाणी क्या झूठ होगी ? कलिकाल का भार हद से ज्यादा बढ़ गया, अब सत उपजेगा। राजा ठाकुर को यहां भगवान ने भेजा। पहले यहां छाया था नैराश्य, अकाल, गरीबी। सब को घेरे था फूटन पर्व। सब में फूट। इसे काटो। इसे तोड़ो। उसे हड़पो। किसी का कोई डर नहीं। मर्यादा नहीं। कर्म नहीं। अब भरोसा हुआ···।

उत्तमा : किसे है भरोसा ? क्या है भरोसा ? किस पर है ?

पुजारी : रामजी पर, तुम पर प्रभो।

उत्तमा : बकवास।

पुजारी : अरे क्या कह रहे हैं—जब तक रामलीला समाप्त नहीं होती, तुम उत्तमा नहीं, साक्षात् राम हो राम !

उत्तमा : अपने से मैं दूसरे का भ्रम कैसे कर सकता हूं, मैं जो हूं, अभी तो उसी को नहीं जान पाया।

[पुजारी बढ़कर चरण स्पर्श करता है। नैवेद्य चढ़ाता है।]

पुजारी : जै जै राम। जीवन दान के साथ ही साथ ईश्वर हमें पृथ्वी के आनन्द यज्ञ में मिलाता है। पर ज्ञानमार्गी इस रहस्य को स्वीकार नहीं कर पाते। वे प्रत्येक वस्तु को तर्क से देखना

चाहते हैं। उन पर तुम कृपा करो, हे राम ! उन्हें सद्बुद्धि दो प्रभो !

उत्तमा : पर राम कौन है ?

पुजारी : तुम्हीं हो साक्षात् राम। हे मेरे राम !

उत्तमा : मनुष्य की लीला मुझे राम कैसे बना सकती है ? मैं राम का महज अभिनेता हूं।

पुजारी : राम ! राम ! राम ! यह कह कर मेरे विश्वास की परीक्षा मत लो राम। अभिनेता नाटक में होता है। लीला में मनुष्य ही भगवान हो जाता है। तभी तो वह लीला करता है। इतना ही नहीं, लीला देखने वाले भी दर्शक नहीं रह जाते, वे सब ईश्वर रस हो जाते हैं। रसो वैसः का यही रहस्य है। ईश्वर का अवतार होता है। यह दर्शन इसी लीला से उपजा है। प्रभु का अवतार किसी युग, काल विशेष में ही होकर नहीं रुक जाता। वह अवतार नित्य होता है। हर लीला में वही अवतार लेते हैं, नित्य अवतार। हे प्रभु, तेरी लीला अपरम्पार। मनुष्य यहां ईश्वर हो सकता है। उसी के माध्यम से ईश्वर का हम दर्शन करते हैं—यही तो सनातन धर्म का महान रहस्य है।

उत्तमा : पर लीला तक में ही भगवान का अवतार सीमित क्यों ? वह शेष जीवन में क्यों नहीं ?

पुजारी : जो सम्पूर्ण जीवन में आनन्द की लीला देखता है उसके लिए सब कुछ, सर्वत्र ईश्वरमय है। सब में वही अवतरित है।

उत्तमा : पर जीवन में आनन्द कहां है ? जो नहीं है, उसे देखना क्या यह अन्धविश्वास नहीं ? यथार्थ को लीला मानकर यथार्थ से क्या भागना नहीं है ?

पुजारी : शिव, शिव, शिव ! राम के मुंह से यह भाषा ! नहीं, नहीं, मेरी और परीक्षा मत लो राम। निर्बल के बल राम, मुझ पर कृपा करो।

उत्तमा : निर्बल पर राम कभी कृपा नहीं करते। यह जगत, संसार

लीला नहीं है। कठोर यथार्थ है। यहां सब कुछ नियम से चलता है। यहां लीला और आनन्द कहां है ?

पुजारी : जहां से सारे नियम आते हैं, जिसके अमोघ शासन से सूर्य, चन्द्र उदित अस्त होते हैं, जिसके नियम से वायु और मृत्यु भी मुक्त नहीं हैं, उसी महाशक्ति का नाम ईश्वर है। ईश्वर के आनन्द को जो सर्वत्र नहीं देख पाता, वह केवल भय में जीता है।

उत्तमा : हां, यही यथार्थ है, निन्नानवे प्रतिशत मनुष्य भय में जीता है।

पुजारी : जो जानते हैं भय के बीच अभय है, नियम के बीच आनन्द अपने आप को प्रकाशित करता है, वही सारे भ्रम, बंधन को पार कर आगे निकल जाते हैं।

उत्तमा : यह ऊंचा दर्शन, महाज्ञान, लाखों-करोड़ों में शायद एक जन के लिए हो। मनुष्य अभी केवल यथार्थ है—काम और अर्थ में फंसा हुआ, आप उससे अध्यात्म की बातें करते हैं ? राजा ठाकुर के यहां आने से पहले पुजारी, तुम्हारा यह अध्यात्म, यह चरम दर्शन कहां था ! तुम्हारी यह भाषा, यह ज्ञान, पहले कहां था ? ईश्वर नहीं, मूल राजा है। वहीं से यह सब कुछ निकला है।

पुजारी : हाथ जोड़ता हूं राम। ये बातें तुम राजा ठाकुर के सामने मत कहना। वचन दो राम। शरण में हूं।

[विराम]

उत्तमा : जब तक लीला समाप्त नहीं हो जाती, मैं इसी दी हुई राम की मर्यादा में ही रहूंगा।

पुजारी : जै हो राम। जै जै राम।

[जाने लगते हैं सहसा लौट कर]

पुजारी : मेरी बात का बुरा मत मानना राम !

[जाते-जाते फिर लौटते हैं।]

पुजारी : भविष्य मंगलमय है राम।

[जाकर फिर लौटते हैं।]

पुजारी : आज रात तो पंचवटी में राम की लीला है। ठकुरानी साक्षात् जानकी हैं। अच्छा अब चलूंगा। विलम्ब हो गया (**जाकर फिर लौटना**) अरे चरण स्पर्श करना तो भूल ही गया। (**करता है**) यही तो बात है, भावना में बह जाता हूं। अब आज्ञा दो राम।

[जाते हैं। गंगाजली आती है।]

गंगाजली : चरण छूती हूं भगवान के।

उत्तमा : मैं कहां का भगवान ? मेरी हंसी मत करो। किसी के कहने या मानने से कोई भगवान नहीं हो सकता।

गंगाजली : जब पत्थर की मूरत भगवान हो सकती है तो भला तुम क्यों नहीं हो सकते राम !

उत्तमा : पत्थर निष्प्राण है, उसे कुछ भी माना जा सकता है।

गंगाजली : नहीं, नहीं, ऐसा अपने मुख से मत कहो राम। मैं तुम्हारे दरबार में एक भीख मांगने आई हूं राम। तुम्हें मालूम है—मैं सवा सौ रुपये में खरीदकर इस गांव में बहू बनाकर ले आई गई थी। कुल सोलह साल की तब उमर थी मेरी। भभुआडीह का वह शिवमंगल तिवारी मुझे फुसलाकर बम्बई भगा ले गया। तुम जानते हो राम, फिर मेरे लिए कितना क्या-क्या नहीं हुआ। तीन साल तक मुकदमा चला। तब से पति के घर में मेरी क्या दुर्दशा है, तुम्हें सब पता है। मुझे पतिता की तरह घर में रखा जाता है। मुझसे जानवर जैसा व्यवहार किया जाता है।

[रो पड़ती है।]

उत्तमा : ठाकुर के दरबार में न्याय मांगने नहीं गई ?

गंगाजली : मेरी कहां इतनी हिम्मत ! ठाकुर राजा अपनी क्षत्री जाति की तरफदारी करेगा कि···।

उत्तमा : क्षत्रिय क्या तुम नहीं हो ?

गंगाजली : मैं कुछ भी नहीं हूं राम। वह अहिल्या पति के शाप से पत्थर हो गई थी। मैं गंगाजली इस गांव में माटी और राख भी नहीं !

[रोती है।]

उत्तमा : धीरज बांधो गंगाजली। तुम्हें न्याय मिलेगा।

गंगाजली : बस, यही भीख मांगने आई हूं तुम्हारे दरबार में राम। जैसे अपने चरणों से छूकर उस अहिल्या को तारा, मुझे भी तार दो पतित पावन।

[रो रही है। उत्तमा आकर धीरज बंधाता है।]

उत्तमा : अगर मेरे स्पर्श से तुम्हारा कल्याण हो जाए तो लो, मैं स्पर्श करता हूं तुम्हें। तुम्हारे चरणों को अपने माथे से छूता हूं।

[गंगाजली डर कर भागती है।]

गंगाजली : नहीं नहीं। मेरा सर्वनाश होगा। मैं तो तुम्हारे चरणों में माथा छुलाकर पवित्र हो जाना चाहती हूं।

उत्तमा : फिर ऐसा करो गंगाजली। आज रात की रामलीला में यह कहते हुए तुम दौड़कर मेरे पास आ जाना—'अहिल्या की तरह गंगाजली का उद्धार करो राम' मैं सबके सामने तुम्हें अपने चरणों से स्पर्श कर···।

गंगाजली : (अति प्रसन्न) धन्य हो राम। जै हो पतित पावन की ! जै हो !

[भागती है।]

उत्तमा : (स्वगत) ये कैसी-कैसी कथाएं हमारे दिल और दिमाग में बैठा दी गई हैं ? अपने अनुरूप राम और शिव की कथाएं गढ़कर स्वयं अपने चरित्र को प्रकट करते हैं ! सती के शव को अपने कंधे पर लिये शंकर जी घूमते हैं, क्योंकि यहां का मनुष्य अपने मरे हुए निर्जीव अतीत को अपने कंधे पर ढोता रहता है। वह विपत्ति में रोता है, इसीलिए उसके राम रोते हैं। वह अत्याचार, अन्याय सहता है, तभी उसकी जानकी को वही स्वीकार करना पड़ता है। शायद तभी जीवन, कथा नहीं, पत्थर नहीं है। यह ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो इन धर्म-कथाओं द्वारा समझी जा सके। इसे दूसरे के अनुकरण या किसी पूजा प्रार्थना से नहीं जाना जा सकता। इसे तभी जाना जा सकता

है, जब हम खुद जीवित हों। पर कैसे ?

[बीपत, माटी के साथ, माटी का पति गोबर भी आता है।]

माटी : दुहाई राम की। हमारी कुछ फरियाद है।

गोबर : हमारे पूत बीपत की कहीं शादी कराओ भगवान।

माटी : इस दहिजरे के पूत को कोई अपनी बेटी ब्याहने को तैयार नहीं होता।

बीपत : इनकी शादी तो खुद नहीं हुई है, मेरी का कराएंगे, हां।

माटी : चुप रह मुंहजरा।

गोबर : भगवान है, शाप दे देंगे रे।

बीपत : अरे उत्तमा भैया के साथ हम बहुत गुल्ली-डंडा खेले हैं। बचपन में जब यह भिक्षा मांगने जाते थे, मैं जंगल में बकरी चराता था। इन्हें बकरी का दूध पिलाया है। यह मुझे किस्सा सुनाते थे। एक रहा राजा। वोकरे तीन लरिके। जब तीनों लरिके, मतलब राजकुमार, शादी लायक हुए तब राजा ने कहा—आपन आपन बाण चलाओ। जेकर बाण जहां गिरी वहीं तेकर शादी। बड़िके औ मझिलिके कै बाण गिरे जाइके राजमहलों में। छोटेके कै बाण गिरा पेड़ के खोंड़रे में। सो उसकी शादी हुई उस पेड़ की बंदरिया से···

माटी : चुप रह !

गोबर : बड़ा आया बकर-बकर करने !

बीपत : कोई मैं झूठी बात कहि रहा हूं भइया ?

गोबर : भइया नहीं, राम कह राम।

बीपत : हां नहीं तो, मैं नहीं जानता राम वाम। जिसे कभी देखा नहीं कैसे मानूं।

उत्तमा : बिलकुल ठीक कहता है।

बीपत : मैं किसी अंधी, लूली, लंगड़ी से बियाह नहीं करूंगा हां, सुनि लो। जैसी ठकुरानी हैं, उसी तरह की मेहरारू से शादी करूंगा। नाहीं तो उत्तमा भइया की तरह कुंवारा रहूंगा, हां।

बात कही साफ।

[मां-बाप दोनों उसे दौड़ा लेते हैं।]

माटी : अरे तेरे मुंह पर आग लागै। मुंहझौसा ! ठाकुर सुनेंगे तो तेरी खाल खिचवा लेंगे।

गोबर : उहै कहावत है—सोवै कथरी गोनरी, सपना देखे धौराहर का !

[उसे दौड़ाते हुए दोनों जाते हैं।]

दूसरा दृश्य

[मंच पर रामलीला। राम (उत्तमा) और सीता (ठकुरानी) बैठे हैं। दाईं ओर मंच पर खड़े हैं नट और सूत्रधार, लीला गायन शुरू करते हैं।]

दया निधि तोरी दया है अपार।
प्रभु तुम अगम अगोचर अविकल हो,
चर अचर सकल के तुम्हीं अधार।
मोहे पार उतार भवसागर धार
प्रभु तोरी दया है अपार।
दीनबन्धु दशरथ नंदन जनक सुता के गुन गावें
हरसावें सुख पावें हमें पार उतार।
प्रभु तोरी दया है अपार।

सूत्रधार : आनन रहित सकल रस भोगी
बिन वाणी वक्ता बड़ योगी।
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा
गई घ्रान बिन वास अशेषा।
पद बिनु चलै सुनै बिनु काना
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।

नट : एक अवधेश राम दूजे हैं परसुराम
तीजे बलराम राम तीनों ही ये राम हैं।

तीनों से निराला आला एक राम और भी है
हरिहर आदि जाके अगणित नाम हैं।
सकल जगत को रमाता है जो अपने में
रमा है जो रोम रोम व्याप्त सर्वधाम है।
ताह टेक राखन को रामायण भाखन को
कीर्ति रस चाखन को लाखन प्रणाम है।

[ठाकुर पुजारी के साथ मंच पर आकर राम और सीता की पूजा करते हैं और आरती उतारते हैं। पूजा आरती के बाद नट और सूत्रधार सामने आते हैं।]

सूत्रधार : हे भाई, देखो आज की रात कितनी सुन्दर है। पवित्र है, विचित्र है, जिसकी प्रशंसा नहीं हो सकती।

नट : मित्र ! मेरी इच्छा है कि ऐसे सुन्दर सुहावने समय में श्री रामचन्द्र की लीला का अगला अध्याय खेला जाए।

सूत्रधार : लीला का वह कौन-सा अध्याय है आज ?

नट : पंचवटी।

सूत्रधार : पर लीला कौन-सी ?

नट : शूर्पणखा लीला।

सूत्रधार : धन्य है धन्य है। तेरी बुद्धि और शुद्धि को, जो इस समय ऐसी पवित्र लीला का स्मरण किया। अब यही लीला खेलकर अपनी व सबकी आत्माओं को नव-जीवन प्रदान करेंगे। इस लोक में भी तरेंगे। परलोक में भी तरेंगे।

नट : तो अब विलम्ब क्यों ?

सूत्रधार : कोई विलम्ब नहीं। सब तैयार हैं।

[दोनों मंच ठीक करते हैं। राम और जानकी कुर्सी से उठकर खड़े होते हैं। लक्ष्मण (बाकुल) आते हैं।]

राम : हे लक्ष्मण ! तुम अब तक कहां थे ? इतने विलम्ब से क्यों आए ?

लक्ष्मण : 'मेकअप' करा रहा था। आज मैं मोंछ लगाना चाहता था, पुजारी जिद कर रहे थे—मोंछ नहीं लगेगी। मैं कह रहा

था—आज लगेगी, जरूर लगेगी।

पुजारी : **(किनारे से)** अरे यह क्या कर रहे हो ? लीला शुरू हो गई है। अपनी वार्ता बोलो।

[हाथ जोड़ कर क्षमा मांगते हैं।]

राम : **(खड़े होकर)** हे लक्ष्मण ! तुम अब तक कहां थे ?

लक्ष्मण : आज घर से ही आने में देर हो गई।

पुजारी : **(गुस्से में ताली बजाकर)** क्या करते हो ? लीला की अपनी वार्ता बोलो।

लक्ष्मण : हां, हां बोलता हूं।

पुजारी : बोलो न।

लक्ष्मण : राम नहीं, जानकी बोलेंगी कि हे लक्ष्मण, तुम अब तक कहां थे, तब मैं बोलूंगा। **(उत्साह में आकर)** जहां जो बात फबती हो, वही कहना। वही कहना। किसी के रोब में दबकर कुछ का कुछ नहीं कहना।

पुजारी : लक्ष्मण ! चुप रहो। राम को बोलने दो।

[संगीत बजकर रुकता है।]

राम : अहा ! आज पंचवटी कितनी सुहानी है !

सीता : सारी प्रकृति मनभावनी है।

राम : क्यों भाई लक्ष्मण ?

लक्ष्मण : बेशक ! इसमें भी क्या कहना है।

राम : जटाएं कलियों ने बांध रखी हैं फूल का सर खुला है। कमल का पत्ता पड़ा है जल पर; मगर यह बंधकर खुला है। बड़ा ही बारीक लेख है ये पर अक्षर खुला है। खुली हुई हों जो अपनी आंखें तो सारा त्रिभुवन खुला है !

सीता : वत्स लक्ष्मण ! भला बताओ तो कलियों ने जटाएं क्यों बांध रखी हैं ?

लक्ष्मण : मां ! ये ब्रह्मचर्य व्रत धारण किए हुए हैं अपने बचपन में, वो तत्त्व संग्रह कर रही हैं जो इन्हें कली से पुष्प बनाएगा। अपनी सुगन्धि के साथ दूसरों को भी सुख पहुंचाएगा।

सीता : इधर कमल का पत्ता कह रहा है कि दुनिया में रहो तो यों रहो कि दुनिया तुम्हें पकड़ न ले।

राम : पास जब बैठो तो बैठो इसके तेवर ताड़ कर, बैठने का डर नहीं उठो तो दामन झाड़ कर। मालोजर में खेलते हैं, मालोजर छूते नहीं। जिन्दगी जल में गई, जल को मगर छूते नहीं।

लक्ष्मण : और देखिए फूलों का स्वभाव तो मशहूर है। पर इनमें सत्य बोलने की शक्ति भी जरूर है।

सीता : कैसे ?

लक्ष्मण : गेंदे के फूल ने कभी चमेली की गंध नहीं चुराई, चमेली से कभी गुलाब की खुशबू नहीं आई।

सीता : कैसा ही वक्त आए, बने चाहे जो जान पर, जो कुछ छुपा है दिल में, वही है जुबान पर।

राम : ये तो गिरे हुए इनसान ही करते हैं, अपनी आत्मा से घात, कि जैसा समय, वैसी बात।

लक्ष्मण : अगर है सत्यता तो बात हो नहीं सकती हलकी। बड़ा बल आत्मबल है, इसके सामने किसी की नहीं चलती।

[सहसा नाचती हुई शूर्पणखा आती है।]

सीता : ओ हो ! यह कौन है ?

लक्ष्मण : लगती कोई भूत है।

राम : नहीं, प्रकृति की अनोखी भूख है।

[नाचती हुई रुक कर]

शूर्पणखा : (**राम को देखकर**) इनकी सूरत पर नजर आता है, कुल भी, रूप भी, तेज कहता है कि योगी भी हैं और भूप भी।

[नाचती हुई गा पड़ती है।]

हाय ! तो पै नजर लागी।
चपल लोचन तेरे बेचैन बेआराम करते हैं।
ये किस वन के हिरन हैं जो वधिक का काम करते हैं—
हाय, तो पै नजर लागी।

लक्ष्मण : बस बस···!

शूर्पणखा : हे मदनमूर्ति पुरुषों ! कौन हो ?

राम : हम अयोध्या नरेश राजा दशरथ के पुत्र हैं।

शूर्पणखा : हाय कितने सुन्दर हो। भला नाम क्या है ?

राम : मेरा नाम राम है। यह लक्ष्मण हैं। यह मेरी स्त्री सीता।

शूर्पणखा : मैं इसका नाम नहीं पूछती। ना मैं इसे जानना ही चाहती हूं, छी:।

राम : तुम कौन हो ?

शूर्पणखा : मैं लंकपति रावण की बहन हूं।

लक्ष्मण : यहां कैसे आई ?

शूर्पणखा : मुझे हासिल है आजादी कहीं भी आने जाने में। लगाती रहती हूं मैं दिन रात चक्कर जमाने में।

राम : अच्छा। तुम किसकी पत्नी हो ?

शूर्पणखा : सुनो मैं हूं कुमारी। पति की ही तलाश में यहां पधारी।

राम : अरे अब तक तुम्हें पति ही नहीं मिला ?

शूर्पणखा : देव किन्नर मेरे पति बनें इतनी उनकी औकात कहां ? गंधर्वों में वह हुस्न कहां, यह रूप कहां, यह गात कहां ? हों लाख हसीन जमाने में, लेकिन फिर भी वह बात कहां ? हां तुम कुछ-कुछ इस काबिल हो जो मेरा पति बनो और प्यार करो। मैं तुमको अंगीकार करूं, तुम मुझको अंगीकार करो।

[नाचती है।]

राम : देवी, हम पर दया करो। इस आशा को छोड़ अपनी राह लगो।

शूर्पणखा : ओह, मुझे धिक्कारते हो।

राम : नहीं, नहीं, हम क्षमा मांगते हैं।

शूर्पणखा : ओह ! तुम्हें अपनी किस्मत पर नाज करना चाहिए। अपने नसीब पर इतराना चाहिए।

राम : तुम सब प्रकार से श्रेष्ठ हो भद्रे ! पर मैं विवाहित हूं। सीता मेरी पत्नी है।

शूर्पणखा : ओ हो तुम्हारे पिता ने तो तीन विवाह किए, तुम दो से ही

घबराते हो !

राम : क्षमा हो देवि, सीता के अलावा मैं किसी और स्त्री को स्वीकार नहीं कर सकता।

शूर्पणखा : ओ हो, तो मैं इसे अभी मार डालती हूं।

राम : इतना कष्ट उठाने की क्या जरूरत ? वह देखो मेरे छोटे भाई लक्ष्मण। इनके पास स्त्री नहीं है। यह तुम्हारे स्वामी होने योग्य हैं।

शूर्पणखा : (**लक्ष्मण से**) सुना, तुम्हारे भाई क्या कहते हैं ?

लक्ष्मण : मैंने सब कुछ सुना। पर मैं तो उन्हीं का दास हूं।

शूर्पणखा : मैं तुम्हारी दासी बनूंगी।

लक्ष्मण : असम्भव है गऊ आकर बंधे इक सांप के बिल में,
अपावन है जो उतरेंगे इस नापाक मंजिल में।
बन के दासी राह क्यों स्वच्छन्दता की बन्द की,
जाओ स्वामी के निकट यदि इच्छा है आनन्द की।

शूर्पणखा : (**गाती नाचती राम के पास**) हे राम मत करो परेशान !
तुम चन्द्र मैं चकोर दिल बेकरार है,
मझधार में लगा दो मेरी नाव पार है।

राम : हे त्रिया सुकुमार ! तुम लक्ष्मण के पास जाओ। वही तुम्हारी सब अभिलाषा पूरी करेंगे।

शूर्पणखा : (**नाचती गाती लक्ष्मण से**) मानो जी मानो, मुझे प्रीति में फंसाने वाले।
दिल को चुराने वाले, बातें बनाने वाले।
हम को रिझाने वाले।
मानो जी मानो मुझे प्रीति में फंसाने वाले।

लक्ष्मण : तुमसे पहले जहां मैं पराधीन हूं
मेरे ऊपर करो अब कृपा की नजर
जाओ श्रीराम पर जाओ श्रीराम पर
बस वही सब करेंगे तुम्हारी फिकर।

[अचानक पीछे से बाकुल की पत्नी मैना गुस्से में बेलन

लिए आती है।]

मैना : देखूं तो कैसी है वह शूर्पणखा मुहझौंसी, जो मेरे मरद को मुझसे छीन रही है।

पुजारी : (**रोकते हैं**) अरे रे रे, क्या करती है ? देखती नहीं, रामलीला चल रही है।

मैना : वही तो देखन आई हूं। कहां है वह शूर्पणखा, उसकी नाक मैं कूचूंगी इसी बेलना से।

[शूर्पणखा डर के मारे भाग गई है। **बाकुल** भयभीत राम सीता के पीछे छिप गए हैं।]

मैना : कहां है मेरा मरद ? वह मुई किधर गई ?

बाकुल : अरे तू कहां आ गई इधर ? भागती है कि···

मैना : अरे बड़ा आया हई हई करके। मेरे सामने आ तो देख। बड़ा आया लीला करने। लछमन बनिके लड्डू खाए चले हैं। मैं खिलाऊं लड्डू !

बाकुल : हे राम। मेरी औरत से मुझे बचाओ।···हे तिरिया ! घर जाओ। घर जाओ। मैना प्यारी घर जाओ।

राम : हे मैना। यहां से जाओ। अपने मरद को इतना मत सताओ। सीधे घर जाओ।

मैना : मैं कहे देती हूं हां, कोई हमरे बीच मा बोले नाहीं। वह शूर्पणखा किधर गई ? तोड़ूं उसकी कमर, फोड़ूं उसकी नजर।

बाकुल : अरे ई तो लीला की भाषा बोलन लगी। सुन मैना, वह गई। अब तू यहां से जा। वरना तू लक्ष्मण का क्रोध नहीं जानती। मैंने ताड़का जैसी राक्षसिनी को खदेड़ा। उसके भाइयों का हाथ मरोड़ा। परशुराम के छक्के छुड़ाए। जिसे आना हो मेरे सामने आए।

मैना : अच्छा। रुका, आवत बाटी। अब भागत कहां ? अरे मैं कहूं —सीधे से अपने घर चलो। लुकाए से काम नहीं चली !

बाकुल : हे मातु जानकी ! इससे मुझे बचाओ। इसे किसी तरह घर

भिजवाओ, नहीं तो लीला नहीं होने देगी।

सीता : हे बहिन ! लीला में विघ्न मत डालो।

मैना : सुनो ! हम बात कही साफ, ई औरत मरद के बीच का मामला है। कोऊ हमरे बीच मा ना पड़े, हां।

वीरसिंह : **(परदे के पास से)** कैसे मरद हो बाकुलसिंह, कसकर डांट नहीं सकते। ऐसी बद्जात औरत को यहां से भगा नहीं सकते। तो फिर रावण की बहिन शूर्पणखा की नाक क्या काटोगे ? हम सब मरदों की नाक कटा डालोगे !

बाकुल : **(उत्साह में)** जो प्रभु का अनुशासन पाऊं, कंदुक सम ब्रह्मांड उठाऊं।

त्रिया चरित्र समझै नहीं कोय,
बिना दंड सीधी नहिं होय।

सावधान ! या तो यहां से फौरन चली जा, वरना···

मैना : वरना क्या ? बोल, वरना का करबो तूं ?

पुजारी : हे ! तू यहां से जाती है कि नहीं ?

मैना : नाहीं। अपने मरद को यहां से लैके जाबूं।

बाकुल : पर हे हतभागिनी, अभी तो मुझे शूर्पणखा की नाक काटनी है।

मैना : अब तेरी नाक मैं काटूंगी।

वीरसिंह : वाह ! यह विचार उत्तम है। हमें तो नाक कटने से मतलब है, चाहे शूर्पणखा की हो, चाहे तुम्हारी हो या चाहे लक्ष्मण की हो।

पुजारी : नहीं, नाक शूर्पणखा की ही कटेगी। यह लीला है कि कोई मजाक है !

वीरसिंह : तो इसे ही शूर्पणखा क्यों न समझ लिया जाए ?

बाकुल : बिल्कुल समझ लिया जाए।

पुजारी : तो चलो ! इसीकी नाक काटो। लीला में विलम्ब हो रहा है।

बाकुल : मैं और इसकी नाक काटूं ? बाप रे। राम ! हे कृपानिधान ! तुलसीदास को मैं हाथ जोड़कर मना लूंगा। हे धनुषधारी

महावीर राम ! लक्ष्मण की जगह तुम्हीं इसकी नाक काट दो। मैं तुम्हारी जगह रावण वध का काम पूरा कर दूंगा।

राम : नहीं बन्धु ! यह मुझसे नहीं होगा।

बाकुल : हे सीता मां ! मुझ पर दया करो।

सीता : अब एक ही उपाय है लक्ष्मण ! तुम इसे घर पहुंचाकर सकुशल वापस आओ।

बाकुल : और रास्ते में इसने मेरी नाक काट ली तो ?

सीता : जाओ वीर लक्ष्मण, धैर्य रखो। ऐसा नहीं होगा।

मैना : **(हाथ पकड़ कर)** हे ! अब सीधे घर चलो।

लक्ष्मण : और शूर्पणखा लीला ?

मैना : सीधे चलबो कि नाहीं ?

[खींचकर बाहर ले जाती है। बाहर शोर होता है। लक्ष्मण अपनी कटी नाक पकड़े आते हैं।]

राम : हाय लक्ष्मण ! यह क्या हुआ ?

सीता : हाय ! किसने काट ली तुम्हरी नाक ?

लक्ष्मण : नाक ही कटने से मतलब था। मैंने नाक कटा ली। ताकि आगे लीला में कोई विघ्न न हो।

[संगीत बजना शुरू होता है। दोनों गायक आकर गाते हैं।]

लाल लाड़िले लखन, हित हौ जन के
सुमरे संकटहारी सकल सुमंगल कारी।
पालक कृपालु अपने पन के।
धरती-धरनहार भंजन भुवनभार
अवतार साहसी सहस फन के॥

[गायक जाते हैं।]

राम : हे लक्ष्मण ! अब हमें यहां से आगे चलना चाहिए।

लक्ष्मण : जी हां आर्य ! फौरन चलना चाहिए।

[तीनों चलते हैं।]

सीता : सूर्य अस्ताचल को चला गया। जंगल में चारों ओर कितनी

शांति है !

राम : सीते ! तुम्हें जंगल में भय नहीं लगता ?

सीता : आर्य के रहते हुए मुझे कैसा भय ? धनुषधारी वीर लक्ष्मण जिसके देवर हों, उसे भला कैसा भय ?

राम : पर लक्ष्मण तो स्त्री देखकर भयभीत हो जाते हैं।

लक्ष्मण : आर्य ! मेरा परिहास मत कीजिए। विश्वास रखिए, अब मैं तुलसीदास का लक्ष्मण हूं। वीर हूं। बलवान हूं।

[तीनों चलते हैं। वाद्य संगीत उभर रहा है। फिर अचानक गंगाजली दौड़ी आकर मंच पर गिर पड़ती है।]

पुजारी : अरे रे रे। यह औरत कहां से फाट पड़ी ?

वीरसिंह : आज लीला में कितना विघ्न हो रहा है।

पुजारी : अरे यह तो गंगाजली है ! बेहोश पड़ी है।

राम : वह कलंकिनी अहिल्या है। शिला खण्ड। पत्थर की मूर्ति वही नारी है।

पुजारी : आज की लीला का यह दृश्य नहीं है।

राम : मैं अपने चरण स्पर्श से इसे शाप मुक्त करता हूं। इसके कलंक को दूर करता हूं।

पुजारी : नहीं, नहीं। यहां ऐसा नहीं है।

वीरसिंह : संगीत बजाओ, संगीत ! पर्दा ! पर्दा गिराओ !

गंगाजली : (**उठकर**) धन्य हो राम। तुम्हारी जै हो !

[संगीत के साथ पर्दा गिरता है।]

तीसरा अंक

बाबा : जो कुछ इस गांव जवार में घटा, उसकी कहानी इस धरती पर अमिट है। मेरी जबान पर ठाकुर राजा के उस जमाने की बातें रह गई हैं। किसने नहीं सुनी है उस जमाने की बात। जब ठाकुर की हवेली के सामने चूल्हे खोद कर रसोई बनती थी। भयंकर बाढ़ आई थी सरजू नदी की। बेघरबार हुए सैकड़ों लोगों को मुफ्त खिलाया जाता था। जैसे ही बाढ़ हटती, सारी प्रजा खेती के काम पर जुट जाती। ठाकुर की जै-जैकार करके लोग दिन-रात मेहनत करते। दुगुनी-तिगुनी फसल होती। फिर गांव-गांव से ठाकुर की हवेली, बारादरी और बैठकखाने में लोगों का आना जाना और बढ़ जाता। आज रामलीला। कल भरतमिलाप। परसों कृष्णलीला। अंगरेज कलक्टर आता। रुपये पानी की तरह बहते। लोग डर के मारे थर-थर कांपते। ठाकुर की आज्ञा के सामने कभी कोई सिर नहीं उठा सकता। ठाकुर के साथ अंगरेज अफसर जब कभी इधर से गुजरता तो सारी प्रजा हाथ जोड़े सिर झुकाए रास्ते पर खड़ी रह जाती। अंगरेज मेम के साथ ठकुरानी चलती तो लोग आंख फाड़े देखते रह जाते। जब-जब अंगरेज का दौरा होता, तब-तब दुगुनी मालगुजारी वसूल की जाती। लोग अपना सब कुछ बेचकर मालगुजारी अदा करते। मैनेजर वीरसिंह का लपलपाता हुआ हंटर ! दिन-रात का बेगार, आतंक, शोषण, अत्याचार, सब कुछ सहकर

प्रजा राजा ठाकुर को धर्म का अवतार मानती। ठाकुर का घर, उसका दरबार केवल एक स्थान नहीं था, एक अनुष्ठान बन गया था। ठाकुर का नाम भगवान का नाम था। उसी नाम से गांवों की सारी समाजनीति चलती। मान-मर्यादा, आचार-व्यवहार, विचार-विश्वास, सब कुछ, सारे जीवन का केन्द्र वही राजा ठाकुर था···।

पहला दृश्य

[गांव के चबूतरे पर, आसपास लोग बैठे हैं। संध्या समय।]

बाकुल : ससुराल गया था एक शादी में। वाह वाह! क्या भोजन बना था, जैसे ठाकुर की हवेली का भोजन।

पंचम : भाई, कितना भी हो, ठाकुर की हवेली जैसा व्यंजन कैसे हो सकता है भला। अंगरेज सिपाही अफसर आया था पिछले दिनों। तराई के जंगल में शिकार खेलने गया। इस बार ठाकुर की बंदूक ढोने मैं गया था। जंगल में जो गोश्त बिर-यानी बनी थी, भला उसका भी कोई मुकाबिला है।

बीपत : अरे साहेब, माटी एक दिन ऐसन मछली बनाइस कि जैसे ठाकुर के हवेली की।

कन्हाई : अब सुनो। कहां राजा भोज कहां गांगू तेली।

[हंसी]

बाकुल : भाई एक बात है—बीपत की जो दुल्हन आई है, उसकी आंखें ठकुरानी की आंखों जैसी हैं।

कन्हाई : अच्छा! अब तक मैंने नहीं देखा।

बाकुल : फिर क्या देखा। बड़ी गजब्बा है बीपत की दुल्हनियां। क्या नाम है रे?

बीपत : गोपी।

पंचम : वाह! ऊ गोपी ई कृष्ण कन्हैया।

बाकुल : अरे गोपी अभी ठाकुर की हवेली में गई या नहीं रे? कहीं उस पर वीरसिंह की नज़र न लग जाय।

शेख मौला : बड़ा बदमाश आदमी है। राजा ठाकुर का यखलाक जितना अच्छा है उतना ही वीरसिंह लुच्चा नमकहराम है। ठाकुर ने यहां की मुसलमान प्रजा के लिए ईदगाह बनवाई, और यह वीरसिंह शुरू से ईदगाह के खिलाफ था। भला बताइए, ईद की नमाज पढ़ने हमें पांच कोस दूर जाना पड़ता था, सुलेमपुर बाजार।

पंचम : ठाकुर मन्दिर की आरती में कितनी शांति मिलती है! मेरा बड़ा लड़का बीमार पड़ा। ठाकुर जी के प्रसाद से अच्छा हो गया।

बाकुल : अरे भाई पंचम। तुम्हारी औरत गंगाजली को रामलीला में राम ने चरण स्पर्श करके अहिल्या उद्धार किया, पर इसे तुम नहीं मानते, क्या यह सच है?

पंचम : अरे मैं उत्तमा को राम मानूंगा?

बाकुल : अगर किसी दिन गंगाजली ठाकुर के दरबार में तुम्हारी शिकायत करने चली गई तो बुरा होगा पंचम।

पंचम : ऊ ससुरी की इतनी हिम्मत? डंडा मारकर सिर न फोड़ दूं।

बीपत : तो रमायन मा अहिल्या उद्धार नहीं हुआ?

पंचम : अरे कहां की बात। किसी के चरण छुआने से उद्धार होने लगे तो उत्तमा ने खुद अपना उद्धार क्यों नहीं किया?

शेख मौला : भई सुना है ठाकुर नाराज हैं, उत्तमा से, गजाधर पंडत से।

बाकुल : ठाकुर के खिलाफ बात करना अंगरेज हुकूमत के खिलाफ है।

पंचम : अरे जो बात अपनी समझ में न आवे, ऊ बात जाके ठाकुर के दरबार में समझ आवो। पर कौन समझावै?

कन्हाई : रामबोला चौधरी ने कहा—महात्मा गांधी की जै। उत्तमा की हिम्मत देखो—बोलता है इन्कलाब जिन्दाबाद।

बीपत : इसके माने का भाव बाबू?

पंचम : ठाकुर से पूछो जाकर।

[सब लोग धीरे-धीरे बातें करने लग जाते हैं। मंदिर की आरती का संगीत सुनाई देता है। सारे लोग हाथ जोड़ कर खड़े हो जाते हैं।]

बाकुल : आज मन्दिर के बाहर कंगाल भोजन है।

पंचम : मन्दिर में काले पत्थर की जो गोपाल जी की मूर्ति है, ठकुरानी उन्हीं गोपाल जी की पूजा करती हैं। पुजारी बताते हैं—गोपाल जी जीवन के देवता हैं हाथ में वंशी धारण किए हुए।

बाकुल : नहीं, नहीं। वह प्रेम के देवता हैं। मेरी पत्नी मैना उन्हीं का चरणामृत लेने जाती है।

पंचम : भागो बाकुल सिंह, मैना भाभी आ रही है।

[मैना आती है।]

मैना : झुट्ठा कहीं का ! अपने बाबू का ऐसन मरद है ? तेरी जीभ में आग लागै।

बाकुल : अरे बात का है ?

मैना : चलो घर तब बताऊं। हाट मा भीखा शाह की दुकान पर लोग बतकही करत रहे कि मेरा मरद शूर्पणखां के पीछे पागल है।

बाकुल : सब झगड़ा लगाते हैं। ठाकुर से उजुरदारी करूंगा, मुझे रामलीला में क्या इसलिए लक्ष्मण बनाया गया ?

मैना : कन्हइया के मुंह मा कीड़ा पड़ै। हमार मरद ऐसन नाहीं ना। मुला तू यहां बैठा का करत हो ? खेतीबारी काम कौन देखे ? बैल-गोरू का सानी-पानी कौन करे ?

बाकुल : अच्छा चल, आता हूं।

पंचम : मैना भौजी, आप भी झूठ के पीछे डंडा लेकर पड़ जाती हैं।

मैना : मेरे मरद को तू पचे का जानो। आखिर हाट मा ई बात फैली कैसे ? ई बात का भेद तो ढूंढ़ना ही होगा। नाहीं तो एक हाथ की लौकी, नौ हाथ बीया !

शेख मोला : हरगिज नहीं। आपके मरद ऐसे नहीं हैं।

मैना : मुला होत में कहूं देरी लागत है। (**सब हंस पड़ते हैं।**) हे !

तू पचे बहुत खींसे मत निपोरो, हां कहि देइत है। (**बाकुल का हाथ पकड़ कर**) चलो घर। चलबो कि नाहीं ?

बाकुल : देख, मेरी बेइज्जती मत कर। मैं इस तरह घर नहीं जाऊंगा, हां।

मैना : लाव तो लाठी (**शेख मौला के हाथ का डंडा लेकर**) अब चलबो कि नाहीं ?

बाकुल : नाहीं। मैं क्षत्री हूं। तू मेरी औरत है।

मैना : तू पचे यहां से हटि जाव। कहि देइत है, बस चुप्पेचाप यहां से चला जाव (**सब चले जाते हैं।**) अब बोलो।

बाकुल : अरे मेरे प्यारी मैना ? क्यों करती है इतना गुस्सा ? बोल, तुझे क्या चाहिए ?

मैना : सुनो ! जैसी साड़ी ठकुरानी पहिनत हैं न, वैसी एक साड़ी ला दो।

बाकुल : बाप रे बाप ! एक बीघा खेत बेचना होगा।

मैना : बेच दो। हम तो पहिरब बादररेखवा, चाहे रुपया गज बिकाय। (**दोनों जाते हैं।**)

दूसरा दृश्य

[ठाकुर का दरवाजा। पंचम, कन्हाई के दोनों हाथ पीठ पर बंधे हैं। वे धूप में झुके हैं। पीठ पर पत्थर रखे हैं। बीपत जूते पर पालिश कर रहा है। माटी कुएं से घड़े में पानी भर-भर कर ले आ रही है। ठाकुर सिंधुसिंह का प्रवेश। पीछे-पीछे वीरसिंह—एक हाथ में पनडब्बा। दूसरे हाथ में गुलाब-जल भरी सोने की झझरी। वीरसिंह ठाकुर पर गुलाब जल छिड़कता हुआ आया है।]

ठाकुर : तो वे हैं नमकहराम ! और बाकी लोग कहां हैं ?

वीरसिंह : सिपाही गए हैं पकड़ने सरकार।

ठाकुर : क्यों बे सूअर के बच्चे। तुम लोगों की यह हिम्मत। माल-

गुजारी मत दो। हरजाना ना भरो। बेगार करने में हीला-हवाली करो। पांच नम्बर शुभ है। सबको पांच-पांच हंटर लगाओ।

वीरसिंह : दस-दस हंटर लग चुके हैं।

[माटी घड़ा भरे आती है।]

ठाकुर : यह औरत क्या कर रही है ?

वीरसिंह : कुएं से पानी भर-भर कर हाथी खाने में छिड़काव कर रही है। सारे शूद्र हाथीखाने की धुलाई में लगा दिए गए है।

ठाकुर : ठाकुर जी के मन्दिर के बाद गांव में पोखर खोदा गया। कुएं बने। पाठशाला चली। खैराती दवाखाना खुला। पक्की सड़कें बनीं। क्या सब मुफ्त में हुआ ? हरजाना, गजराना, दूध, दही, घी, मछली, गोश्त, अंडा का शुकराना कैसे कम हुआ ? एक-एक की खाल खिचवाकर भूस भरा दूंगा !

लोग : दुहाई सरकार की, छिमा करो।

[बाहर से शेख मौला, बाकुल और गांव के अन्य स्त्री-पुरुष सिर पर अपने-अपने घरों से दूध, दही, घी, मछली, मांस, सब्जी की सौगात लिए आते हैं।]

ठाकुर : खबरदार, पहले की ही तरह रोज आएंगे ये सौगात। ये चीजें तुम्हारे खाने के लिए नहीं बनी हैं। समझे !

[सौगात लिए लोग अन्दर चले जाते हैं।]

ठाकुर : पंचानन किधर है ? वह उत्तमा क्यों नहीं हाजिर किया गया अब तक ?

[एक सिपाही पंचानन को पकड़े ले आता है।]

ठाकुर : इसने भी अब तक मालगुजारी नहीं दी ?

वीरसिंह : इसकी कोई खेतीबारी नहीं है, सरकार।

ठाकुर : तो क्या हुआ ? यह इस गांव का अन्न-पानी तो खाता-पीता है।

बाबा : ठाकुर ! ईश्वर तुझे सद्बुद्धि दे।

ठाकुर : झुका दो इसे धूप में। इसकी पीठ पर तीन मन का पत्थर

रखो। चलो, देखते क्या हो।

वीरसिंह : यह सन्यासी है धर्मावतार। यह नदी का पानी पीता है। खेतों में गिरे अन्न बटोरकर उसी से पेट पालता है।

ठाकुर : सारे खेत हमारे हैं। नदी का जल मेरा है। यह मेरे राज्य की हवा में जीता है। राजकर इसे भी देना होगा।

बाबा : सावधान ठाकुर ! अपना सामंजस्य मत तोड़ो।

ठाकुर : उपदेश नहीं मालगुजारी चाहिए।

बाबा : याद रखो, प्रवृत्ति के प्रबल हो जाने से ही त्याग और भोग का सामंजस्य टूट जाता है।

ठाकुर : बन्द करो बकवास।

बाबा : किसी एक स्थान पर जब हम अपने अहंकार और वासना को केन्द्रित करते हैं तब हम समग्र को क्षति पहुंचाते हैं।

[भीतर से लोग सौगात देकर वापस लौटते हैं और खड़े रह जाते हैं।]

ठाकुर : इन लोगों ने कर दिया ?

वीरसिंह : इन सबों ने दुगुनी मालगुजारी दे दी है सरकार !

ठाकुर : (उत्तेजित) मैं राजकर की बात पूछ रहा हूं। अंगरेज बहादुर अपने देश में जर्मनी से लड़ाई लड़ रहा है। हमें उसकी मदद करनी है। अंगरेज बहादुर की लड़ाई हमारी लड़ाई है।

वीरसिंह : चलो, सब धूप में झुककर खड़े हो जाओ।

[सब झुक जाते हैं।]

ठाकुर : क्षत्री और मुसलमान को मैं छूट देता हूं।

शेख मौला : हम पर ऐसी खास मेहरबानी क्यों ?

ठाकुर : जबान मत चलाओ।

बाकुल : राजा ठाकुर की जै हो।

[गंगाजली सिर पर कोई सौगात लिए आती है।]

ठाकुर : यह औरत कौन है ?

वीरसिंह : वही गंगाजली, जिसका यह शौहर पंचम इसे पतिता, कलंकिनी मानकर इसके हाथ का छुआ पानी तक नहीं पीता।

ठाकुर : खबरदार, हवेली में मत ले जाना अपनी यह सौगात। जा पीलवान को दे आ।

गंगाजली : हाय ! मेरे पति की यह दुर्दशा !

वीरसिंह : जा यहां से।

[वह जाती है।]

ठाकुर : प्रजा के विश्वास के ही साथ हमें चलना है।

बाबा : ऐसा अंधविश्वास इस गांव में कभी नहीं था। हम गरीब थे, पर दरिद्र नहीं। इनके धर्मविश्वास इतने पंगु नहीं थे।

[सिपाही के साथ गोपी और जगमग आते हैं।]

ठाकुर : हेअ ! मुंह पर से घूंघट हटा। सुनती है या नहीं ?

माटी : दुहाई सरकार की। यह मेरी बहू है। मेरे बीपत की दुलहिन।

ठाकुर : खींच दो इसका घूंघट।

[सिपाही घूंघट खींच देता है। गंगाजली लौटती है।]

ठाकुर : ओह इतनी खूबसूरत ! जब तक तू पूरी मालगुजारी अदा नहीं करेगी, यह हवेली में रहेगी।

गंगाजली : सरकार, इसकी कितनी मालगुजारी बाकी है ?

[वीरसिंह ठाकुर को पान देता है। इत्र गुलाब छिड़कता है। कान में कुछ कहता है।]

ठाकुर : कितने साल से इसकी मालगुजारी बाकी है ?

वीरसिंह : पिछले पांच साल से।

माटी : हाय दइया ! हर साल तो हम मालगुजारी भरते रहे हैं।

ठाकुर : रसीद दिखाओ।

बीपत : मालगुजारी की रसीद कहां मिलती है सरकार।

वीरसिंह : चुप रह। जो देता है उसे मिलती है।

जगमग : आज तक किसी को नहीं मिली है।

ठाकुर : ले जाओ इसे हवेली में।

[दोनों सिपाही गोपी की तरफ बढ़ते हैं। बाबा उन्हें रोक लेता है।]

बाबा : आपको हम धर्मावतार कहते हैं।

ठाकुर : वह मैं हूं, तभी तुम्हें कहना पड़ता है।

बाबा : नहीं, अब लगता है, वह हमारे ऊपर आपका डाला हुआ एक झूठा संस्कार है।

ठाकुर : इस औरत को ले जाओ हवेली में।

बाबा : सावधान ! हवेली खंडहर हो जाएगी !

[ठकुरानी का तेजी से प्रवेश।]

ठकुरानी : नहीं, नहीं। हाथ जोड़ती हूं, अपने शब्द वापस लो। हमें क्षमा करो। ठाकुर महाराज का चित्त शांत नहीं है। नए अंगरेज कलक्टर से मिलकर आए हैं जब से···।

बाबा : मेरे क्षमा करने से कुछ नहीं होगा। मेरे शब्द वासस लेने से क्या होगा ? यह देखो अपनी प्रजा की दशा। कहीं कोई हमारा भी अधिकार है, यह बात ये पूरी तरह नहीं समझते। न जाने कब इनके जीवन में एक घटना घटी थी—उस मछली जैसी घटना, जो एक शीशे के टब में कैद कर दी गई थी। कई बार सिर पटकने के बाद उसकी समझ में आया कि शीशा पानी नहीं है। बाद में उसे एक तालाब में डाल दिया गया—लेकिन उसे यह सोचने की हिम्मत नहीं हुई कि यह शीशा नहीं, पानी है। और वह एक छोटे से दायरे में ही चक्कर लगाने लगी। सिर टकराने का भय गहरे संस्कार की तरह हमारे रक्त में छा गया है।

ठकुरानी : यह अन्याय है, उठो। अपने घर जाओ।

[लोग उठ खड़े होते हैं।]

ठाकुर : यह क्या किया ?

[सारे लोग जाते हैं। पृष्ठभूमि से 'भारतमाता की जै, भारतमाता की जै' के स्वर उठते हैं।]

ठाकुर : (सहसा) कौन है ? कौन है वहां ? इधर चलो, वरना गोली मार दी जाएगी।

[उत्तमा आता है।]

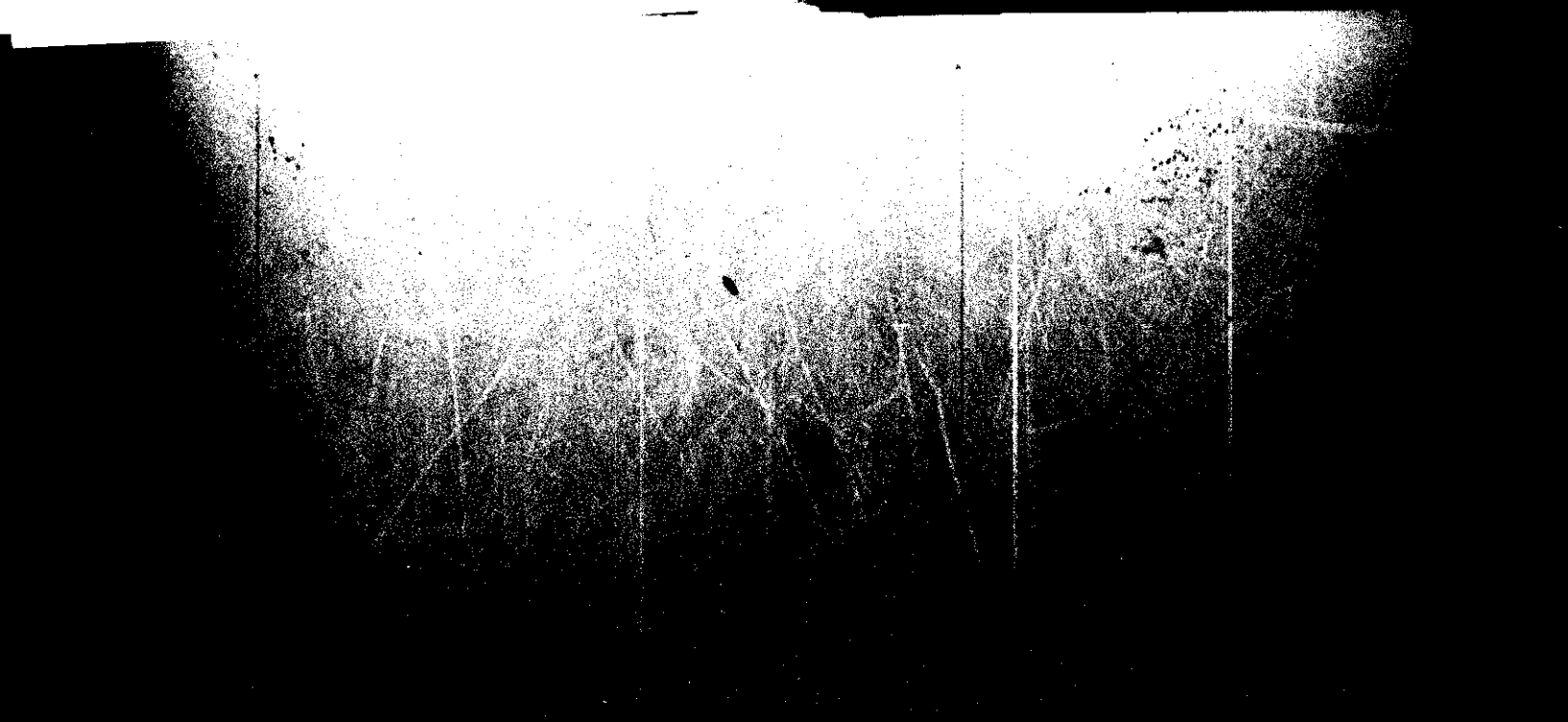

ठाकुर : ओह ! तो तू था वहां। यह जै-जैकार कहां से आई ?

उत्तमा : हम से।

ठाकुर : सबसे पहले भारतमाता का नाम किसने लिया ?

उत्तमा : मैंने।

ठाकुर : इसके मतलब जानते हो ?

उत्तमा : राम बनकर राम का अर्थ नहीं जाना। पर रहस्य का पता चल गया—किसी और के बनाने से कोई कुछ नहीं होता।

ठाकुर : मेरी ताकत का पता है ?

उत्तमा : हमारे बापदादों में जमाने से जो हिन्दू, मुसलमान भाई के भाई की तरह यहां रहते आये हैं, उसमें तुम्हारी ताकत जहर फैला रही है। गांव में एक परिवार की तरह सारी जातियां रहती आयी हैं। तुम्हारी ताकत हमें सवर्ण और शूद्रों में बांटने की कोशिश कर रही है। धर्म के नाम पर अन्धविश्वास और छूआछूत की नफरत फैला कर हमें लड़ाना चाहते हो।

ठाकुर : झूठा, मक्कार ! गांव में मंदिर बनाकर हमने यहां सोये हुए लोगों को जगाया। पोखर, मार्ग और पाठशाला बनाकर हमने मरे हुए लोगों को जीवन दिया।

उत्तमा : केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए। गांव हमारी जन्मभूमि है, पर सम्पूर्ण भारत मातृभूमि है, तुम्हें इसका विरोध क्यों है ?

ठाकुर : वीरसिंह।

वीरसिंह : जी सरकार !

ठाकुर : इसके घर को यहां से उजाड़ दो, अभी, इसी वक्त ! नींव से खुदवा कर फेंक दो। जिस किसी के मुंह से भारतमाता की आवाज निकले, उसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ।

वीरसिंह : ऐसा ही होगा।

उत्तमा : सुनो, भारतमाता की आवाज—कुल से, ग्राम से, सारी पृथ्वी से भी भारत देश महान है।

ठाकुर : भारतमाता का नाम मैं और सुनना नहीं चाहता।

ठकुरानी : उस नाम में ऐसा क्या है, यही तो मैं जानना चाहती हूं।

ठाकुर : चलो, मैं बताता हूं।

[ठकुरानी का हाथ पकड़ कर ठाकुर भीतर ले जाता है।]

उत्तमा : सुनो। सुनो ठकुरानी ! चाहे जान चली जाए, हम आघात नहीं करेंगे और इसी तरह विजयी होंगे—यही है मां की वाणी जिसे सुना है मैंने। धर्मयुद्ध बाहर से जीतने में नहीं होता, हार कर भी विजय प्राप्त करने के लिए होता है। अधर्मयुद्ध में जो मरता है, उसका अन्त हो जाता है, लेकिन सत्य अहिंसा के युद्ध में मरने के बाद भी बहुत कुछ शेष रह जाता है। सुनो···

[उत्तमा के मुंह को वीरसिंह भींच लेता है। ठकुरानी दौड़ कर आती है।]

ठकुरानी : क्या करते हो ? इस जलती हुई आग में दमन का ईंधन डाल कर हवेली का सत्यानाश करना चाहते हो ? सुन लो। कहीं किसी का घरबार नहीं उजाड़ा जाएगा। उत्तमा ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया।

[उत्तमा चला जाता है। उत्तेजित ठाकुर का प्रवेश।]

ठाकुर : राजकाज में ठकुरानी का यह हस्तक्षेप मुझे बिलकुल नापसंद है। तुम जानती नहीं, यहां किस भयानक चीज की शुरूआत हो चुकी है। अंगरेज कलक्टर ने मेरे पास खबर भेजी है। स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव मेरे इलाके में बढ़ रहा है। उत्तर से भागे हुए आज़ाद दस्ते के लोग रूप बदल कर इधर आए हैं। तुम्हें पता नहीं, जिस दिन अंगरेज यहां से गए, यहां हमारा अस्तित्व नहीं होगा।

ठकुरानी : जो ईश्वर की इच्छा होगी, वही होगा।

ठाकुर : भाग्य और भगवान पर अंधविश्वास गांव वालों के लिए हैं, यह छूत की बीमारी तुम्हें कहां से लगी ?

ठकुरानी : क्या आपको नहीं लगी ? ठाकुर जी के मंदिर पर पहरा लगा दिया। गांवों को सवर्ण और शूद्रों में बांट कर आखिर हमने

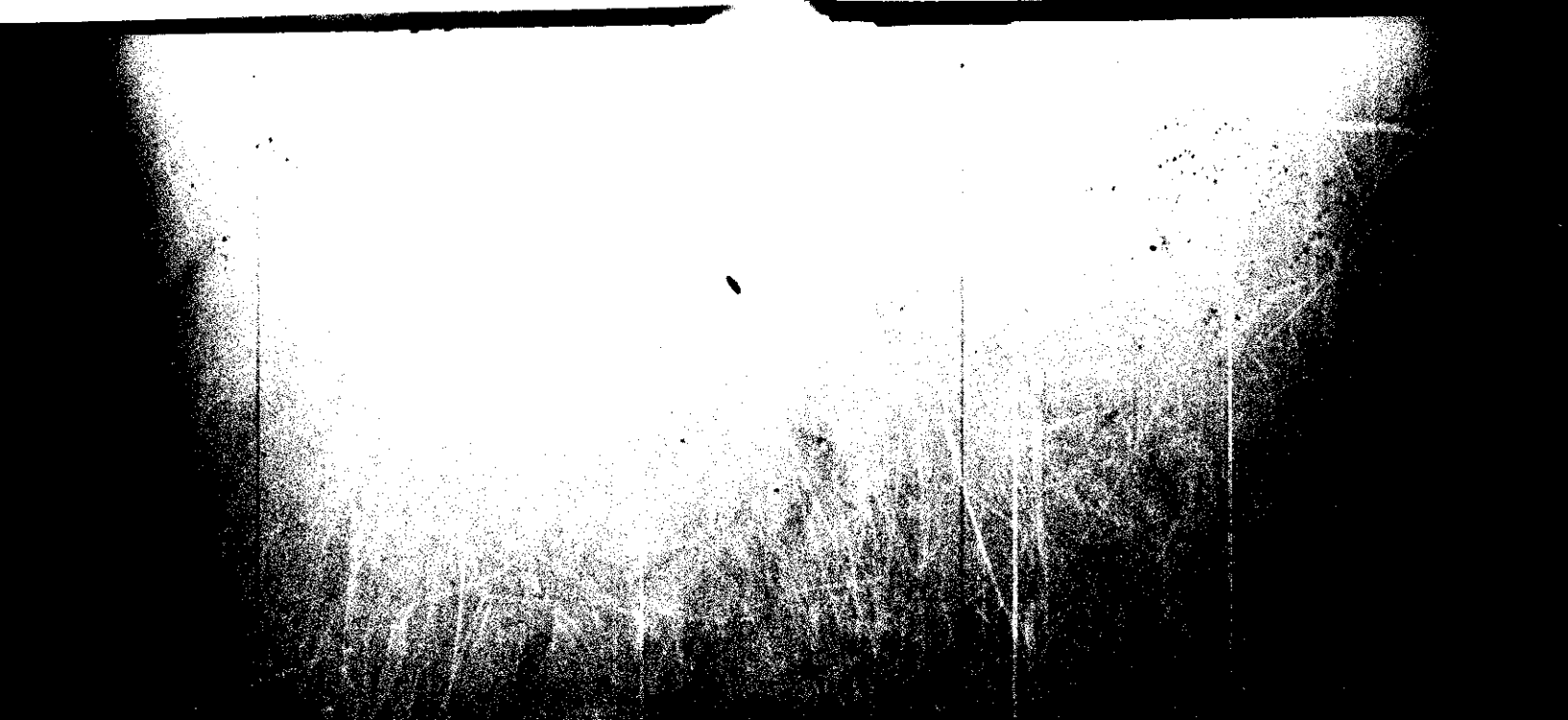

किस की रक्षा की ? देवता पर भी कृपण की तरह अपना अधिकार जमा लिया । अपने भोग-विलास के नशे में दान और पुण्य बंद कर दिया। मनुष्य के प्रति स्नेह और श्रद्धा को साम्प्रदायिकता की आग में जला डालने के उपाय रचे। पुण्य का भंडार हमारे लिए विषय का भंडार नहीं हो गया···?

ठाकुर : तुम्हें अनुभव नहीं, ये मनुष्य नहीं, प्रजा हैं। प्रजा माने भेड़, इन्हें सिर्फ एक हांकने वाला चाहिए। इससे अधिक इन्हें कुछ नहीं चाहिए। कुछ भी नहीं। समझने की कोशिश करो, भेड़ बने रहने में ही इनका कल्याण है और इन्हें हांकते रहने में है हमारी विजय।

ठकुरानी : क्षमा हो, आपकी वाणी में वही अंगरेज बोल रहा है, जो पूरे भारत को हांकने वाले की नज़र से देखता है।

ठाकुर : चुप रहो ठकुरानी।

ठकुरानी : एक दिन जिस भारत ने मनुष्य के प्रति श्रद्धा द्वारा समस्त पृथ्वी में अपना मनुष्यत्व उज्जवल किया था, आज वही इतनी लम्बी गुलामी में मनुष्य के प्रति अश्रद्धा दिखाकर स्वयं अश्रद्धा का भागी हो रहा है।

ठाकुर : तुम्हारी ये बेसिर-पैर की बातें कोई और सुनेगा तो क्या फल होगा, पता है ?

[ठकुरानी शून्य में देखती रह जाती है।]

तीसरा दृश्य

[रात का समय। पंचानन बाबा के घर के सामने लोग इकट्ठे हैं। ढोल, मजीरा, करताल और डंडताल के संगीत की तैयारी है। शेख मौला आते हैं।]

शेख मौला : मैं सोचूं, इस साल होली सूखी ही रह जाएगी।

बाबा : आओ भाई शेख मौला, तुम्हारे बिना फगुआ हो ही कैसे

सकता था।

शेख मौला : चइत्तर चौधरी को ला रहा था, मगर वह बोले, मंगल के दिन घर से बाहर नहीं निकलता। मैंने कहा—चौधरी, दिन नहीं रात है। वह बोले आज दिशाशूल है।

कन्हाई : हां, उनके घर से जगमग का घर उत्तर दिशा में पड़ता है—मंगल बुध उत्तर दिसकालू, घर से निकले काटे भालू।

पंचम : अरे उस दिन पुजारी ने बताया कि आज प्रदोष है, राहू की महादशा है, सो सारा दिन मैं बिना अन्न-पानी के रह गया।

[उत्तमा आता है।]

उत्तमा : भारतमाता की जै।

[सब जय-जयकार करते हैं।]

एक आदमी : भइया हो। ई महात्मा गांधी कहां के राजा हैं ?

बाबा : ई देखो तसवीर।

[बाबा गांधी का चित्र दिखाता है।]

दूसरा आदमी : राज तो ठाकुर कै है।

बीपत : नाहीं राज अंगरेज का है।

कन्हाई : ई समझो कि महात्मा गांधी भगवान के अवतार हैं। धरती पर पाप बढ़िगै रहा। हाथ में सुदर्शन चक्र की तरह चरखा। हाथ में बांसुरी की जगह लकोटी।

बाबा : अब दुख नहीं होगा। झूठ नहीं रहेगा। पाप नहीं ठहरेगा। देश का उद्धार होगा। अब किसी बात का डर नहीं।

उत्तमा : अंगरेज राज खतम होगा। ठाकुर की ठकुराई जाएगी।

पहला आदमी : हे भइया। बिना अंगरेज के ई मुलुक का राज कइसे चलेगा ?

उत्तमा : देखना। भारत आज़ाद होगा, जब स्वराज आएगा।

पंचम : ई सुराज क्या है ?

कन्हाई : सच भइया, अंगरेज चले जइहै ? लाल पगड़ी औ लाल आंखें नाहीं रहेगी ?

बीपत : धनि-धनि भाग, कलियुग बीतेगा।

[संगीत बजने लगता है। लोग फाग गायन शुरू करते है।]

सखी आजु अजुध्या रची होरी
केकरे हाथ मृदंग भल
सोहे केकरे हाथ मजीरा भली।
राम के हाथे मृदंग भल सोहे,
लछिमन हाथ मजीरा भली।
केकरे हाथ कनक पिचकारी
केकरे झोली अबीरा भरी।
राम के हाथे कनक पिचकारी
लछिमन झोला अबीरा भरी।
किनके भीजै पाग दुपट्टा
किनके चोली चीरा सखी।
राम के भीजै पाग दुपट्टा
सीता के चोली चीरा सखी।
सखी आज अजुध्या रची होरी।

बीपत : पंचो, एक उलारा होइ जाए।

सब : चितवै चारो ओर, ताकै चारो ओर, जेकर छोटा बला-मुआ···

[गान समाप्त होते ही बाबा खड़े होकर]

बाबा : बोलो भाइयो। भारत माता की जै। महात्मा गांधी की जै।

[सब एक साथ जय-जयकार करते हैं।]

बाबा : भाई रे, आज दिन आया है। गीत गाते-गाते इस गांव के हिन्दू और सुलेमपुर के मुसलमान एक साथ गले मिले। जात-कुजात ब्राह्मण ठाकुर, शूद्र सबने एक साथ महोत्सव मनाया। घर घर में गाँधी का चरखा चल पड़ा। बूढ़ी मां, दादियों ने बहू-बेटियों को सूत कातना सिखाया। और बातें बतायीं कि कैसे पुराने जमाने में वे सूत काता करती थीं।

उत्तमा : स्वराज चंदा के लिए मुष्टिभिक्षा के लिए घर-घर में मटका रखा

गया। गांव में एकता बढ़ी। नशा-पानी छोड़ने की बात गांव-गांव में समझाई जाने लगी।

बीपत : (खड़ा होकर) पुराना समय बीत गया। अंधियारी रात गई। गांधी का सतजुग आया। अब हमें कोऊ डर नाहीं।

[एक स्वर में जय-जयकार—"भारतमाता की जै।" तभी बाहर से ठाकुर के साथ वीरसिंह, दो सिपाही और बाकुल सिंह लोगों पर हिंसक आक्रमण करते हैं। भगदड़ मचती है।]

उत्तमा : भाइयो! हिंसा का जवाब अहिंसा से देंगे!

बाबा : हम पर जैसा आक्रमण हो, हमारे हाथ नहीं उठेंगे। भारत माता की जै!

उत्तमा : हिंसा का जवाब अहिंसा से। अंगरेजो, भारत छोड़ो! जमींदारी का नाश हो! हम आजादी ले के रहेंगे! स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

[संघर्षरत मंच खाली हो जाता है। लोग पृष्ठभूमि में चले जाते हैं। भारत माता की जय-जयकार के साथ चीख पुकार, मारपीट की आवाज उभरती है। धीरे-धीरे सब शांत हो जाता है। अकेले बाबा आता है।]

बाबा : विश्वास और अंधविश्वास भी फल गया देखते ही देखते। पुलिस की लाठियां पड़ीं। धरपकड़ मची। घर लूटे गए। गांव के गांव के फूंक दिए गए। राजा ठाकुर के साथ अंगरेज कलक्टर और पुलिस कप्तान के दौरे होने लगे पूरे इलाके में। जो खद्दर पहने देखा जाता उसे गिरफ्तार कर लिया जाता। जो गांधी टोपी पहने मिलता, उसे मारकर बेहोश कर दिया जाता। सुलेमपुर के मुसलमानों को अवधपुर के हिन्दुओं के खिलाफ भड़काया गया। तालपुर से भभुआडीह के बीच कितने साम्प्रदायिक दंगे कराये गये। चुनाव के बहाने, अल्पसंख्यकों के नाम पर अंगरेजों ने मुसलमानों को अलग

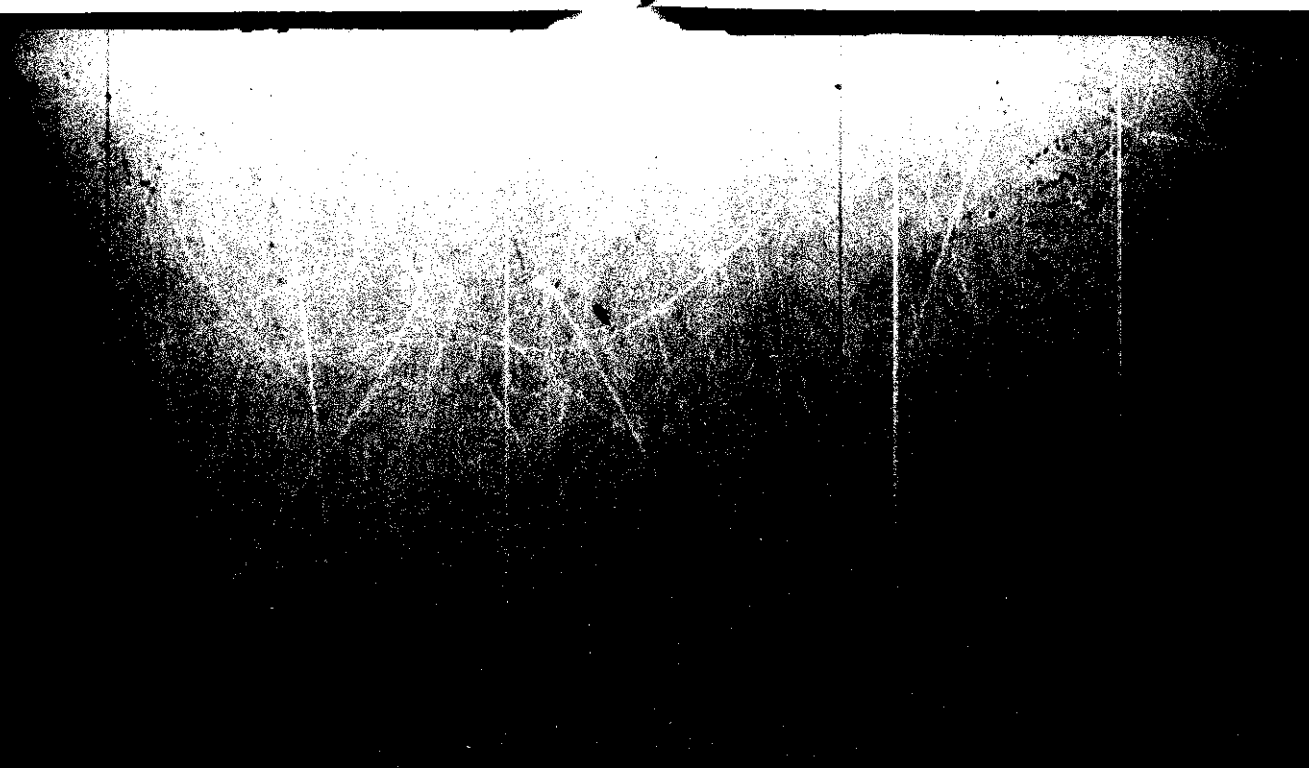

पाकिस्तान बनाने को उकसाया। हरिजनों को हिन्दुओं से काटने के जाल फैलाए गए। अवधपुर के लोगों के जीवन का केन्द्र वही ठाकुर का मंदिर था। और अब उस मंदिर पर भी राजा ठाकुर ने पहरा बैठा दिया। जो स्वराज की लड़ाई के साथ थे, वे मंदिर में नहीं घुस सकते थे। शूद्रों के लिए मंदिर प्रवेश अपराध था। पर पूरे गांव के लिए वह मंदिर ही जैसे जीवन केन्द्र था···। मंदिर के बाहर ही वे अपने राम को पुकारते। कृष्ण की टेर लगाते।

[गांव के स्त्री-पुरुष मंदिर के बाहर बैठ कर गा रहे हैं।]

हरि दरसन को तरसति अंखियां।
झांकति झखति झरोखा बैठी
कर मीड़ति ज्यौं मखियां।
हरि दरसन को तरसति अंखियां।
बिछुरी बदन सुधा निधि रस तैं
लगति नहीं पल अंखियां
हरि दरसन को तरसति अंखियां।
तरसत अंखियां बिपति भरी रतियां
हरि दरसन को तरसति अंखियां।
जैसे पंछिन कैं कटि जाय पंखियां।

[बाबा और उत्तमा आते हैं। संगीत थम जाता है।]

कन्हाई : धन्य हो भगवान का। जेल से छूट कर आ गए।
गंगाजली : महावीर जी को परसाद माना था।
माटी : काली थान पर देवी कीर्तन कराऊँगी।
पंचम : अपनी गंगाजली काशी विश्वनाथ के दर्शन से पवित्र हो गई। हम काशी धाम गए थे।
बाबा : छोड़ो भाई, पिछली बातें भुला दो। आजादी की लड़ाई बहुत दूर तक चली गई है। अब अंगरेज यहां से जाने को हैं।
उत्तमा : गांधी ने कहा है—मंदिर में सब का प्रवेश हो। कोई छूत-

अछूत नहीं। बिना संघर्ष किए कोई अधिकार नहीं मिलता।
पंचम : भगवान के दरवाजे पर भी संघर्ष। हाय! भगवान क्या सोचेंगे?
उत्तमा : संघर्ष और सत्याग्रह। भारत माता की जै।
बाबा : भगवान ने खुद कितने संघर्ष किए हैं। राम जीवनभर राक्षसों से लड़े। कृष्ण भगवान जन्म से अन्त तक लड़ते ही रहे। गीता में अर्जुन को लड़ने के लिए तैयार किया। उठो।

[लोग जय-जयकार करते हुए मंदिर के द्वार की ओर बढ़ते हैं। दो सिपाही, पुजारी और वीरसिंह उन्हें रोकते हैं।]

वीरसिंह : खबरदार, जिसने पैर आगे बढ़ाए···
पुजारी : शूद्रों को मंदिर में घुसा कर भगवान को अपवित्र करना चाहते हो?
बाबा : यह मंदिर जिस पृथ्वी पर है, उसी पर सब खड़े हैं।
पुजारी : फिर मंदिर के भीतर जाने की जरूरत?
उत्तमा : यह मंदिर हमारे खून-पसीने से बना है। सबने मिलकर इसे बनाया है।
पंचम : यह देवभूमि पूरे गांव की है।
बीपत : सबकी है।
गंगाजली: भगवान सब के हैं।
वीरसिंह : पर यहां भगवान को लाया कौन? उनकी प्रतिष्ठा किसने की?

[ठाकुर का बंदूक लिए प्रवेश]

बाबा : किसने की?
ठाकुर : मैंने।
उत्तमा : तुम्हारी यहां प्रतिष्ठा किसने की?
ठाकुर : खुद मैंने।
उत्तमा : नहीं। हम ने।
ठाकुर : इन मूर्खों और बेवकूफों ने, जिन्हें तब उठने-बैठने का शऊर

नहीं था, नंगे, भूखे, बेपढ़े, आलसी, कमजोर, मरे पड़े थे।, आज मेरे खिलाफ ये नमकहराम सिर उठा रहे हैं। जिसने जीवन दिया उसी के खिलाफ खड़े होने का हौसला करते हैं ?

उत्तमा : सच है—धर्म के नाम पर तुमने जगाया, पर हमारी कमाई लूटने के लिए। जीवन दिया, पर खुद उस पर राज करने के लिए। अपने भोग के अलावा यहां और कोई नहीं था तुम्हारे सामने। केवल तुम्हारा अहंकार था।

ठाकुर : मैंने धर्म का जीवन शुरू किया।

बाबा : धर्म अहंकार नहीं है। धर्म, दर्शन और अध्यात्म भी नहीं है। धर्म, केवल जीवन है। उस जीवन का तुम्हें कोई पता नहीं। क्योंकि तुम अपने पर नहीं, दूसरों पर राज्य करना चाहते हो। दूसरों की कमाई पर विलासी बनते हो। तू अंगरेज-गुलाम, अपने आप को राजा ठाकुर समझता है !

ठाकुर : आगे और जबान चलाई तो···।

उत्तमा : हमीं ने तुम्हें यहां प्रतिष्ठित किया। हमारी गरीबी, निराशा, अंधविश्वास, यही वह भूमि थी, जहां आकर तूने अपने राज-महल का स्वप्न देखा।

[ठकुरानी आती है।]

उत्तमा : मंदिर में हम प्रवेश करेंगे।

बाबा : मंदिर हमारी धरती पर हमारे हाथों से बना है।

उत्तमा : मंदिर हमारा है।

बीपत : हम सबका है।

ठाकुर : एक शर्त पर। फिर कोई नहीं यहां भारत माता की जय-जयकार करेगा।

उत्तमा : यही जै-जैकार करते हुए हम मंदिर में प्रवेश करेंगे।

बाबा : चलो, आगे बढ़ो।

ठाकुर : (बंदूक तानते हुए) देखता हूं किसके पैर बढ़ते हैं आगे।

उत्तमा : मैं बढ़ता हूं।

[ठकुरानी दौड़ कर ठाकुर की बंदूक के सामने खड़ी हो जाती है।]

ठाकुर : हट जाओ !

ठकुरानी : तुम्हरी बंदूक से गोली निकले, किसी प्रजा का खून हो, तो वह पहली प्रजा मैं हूं।

ठाकुर : तुम हद से आगे बढ़ रही हो।

ठकुरानी : सब कुछ आगे बढ़ रहा है। कहीं कोई चीज स्थिर नहीं।

ठाकुर : इन्हें छूट देने का मतलब समझती हो ?

ठकुरानी : केवल इतना समझती हूं—आकाश के नीचे जिस पृथ्वी पर चांद और सूरज के प्रकाश में हम सब समान रूप से खड़े हैं, यह साबित करता है, हम सब एक हैं, समान हैं।

ठाकुर : इसका मतलब में शूद्रों को मंदिर में जाने दूं और अपने भगवान को अपवित्र होंने दूं ?

ठकुरानी : भगवान ने शूद्रों के घर भोजन किया है।

ठाकुर : वह उनकी कृपा थी। यहां ये जबरदस्ती कर रहे हैं।

बाबा : देखो, ईश्वर को तुम अपनी कृपा से जोड़ रहे हो।

ठाकुर : हां, जब तक में यहां का मालिक हूं, बिना मेरी कृपा के यहां कुछ नहीं हो सकता !

बाबा : हवा नहीं बह सकती ? चांद-सूरज नहीं निकल सकते ? धरती घूम नहीं सकती ?

[सब हंसकर उपहास करते हैं।]

वीरसिंह : खामोश !

बाबा : (सहसा) ठाकुर ! यह देखो चीटियों का झुंड, जमीन पर। रेंगती हुई असंख्य चीटियां। पहचानो। देखो। इसमें कोई इन्द्र है, कोई विक्रमादित्य, कोई चक्रवर्ती, कोई महाराजा, कोई मुगल राजा, कोई हिन्दू सम्राट, कोई भिखारी, कोई संत···।

[ठकुरानी सहित गांव के लोग जमीन पर झुक कर देखने लगते हैं।]

ठाकुर : जाओ, मंदिर में ताले लगा दो।

बाबा : जाओ सूर्य को हवेली में बंद कर लो। यह सूर्य जो सबका है पुरुष परमेश्वर है। आओ, में उसको अपने माथे पर उठाए मंदिर में प्रवेश करने जा रहा हूं।

[बाबा के पीछे सब बढ़ते हैं। संघर्ष होता है। सब पृष्ठभूमि में चले जाते हैं। भारत माता की जय-जय-कार के बीच बंदूक का फायर होता है। हाथ में बंदूक लिये उत्तमा ठाकुर के साथ निकलता है।]

उत्तमा : एक गोली बेकार चली गई, इस बंदूक में अभी दूसरी शेष है।

ठाकुर : मेरे पास न बंदूकों की कमी है न गोलियों की। बस, खबर भेजते ही अंगरेज कलक्टर, पुलिस कप्तान की सारी ताकत यहां पहुंचेगी और इशारा देते ही यह सारा गांव खाक में मिला दिया जाएगा।

उत्तमा : और तुम खाक नहीं होगे ?

ठाकुर : मैं इस मिट्टी का नहीं।

[रोती हुई ठकुरानी आती है।]

उत्तमा : इस माटी का अन्न खाया है। यहां की वायु से जीवन लिया है। राजा हमने बनाया तुम्हें।

ठाकुर : मैं खुद बना। अपनी बुद्धि और ताकत से।

ठकुरानी : वह बुद्धि और ताकत तुम्हें कहां से मिली ?

ठाकुर : मेरे रक्त में थी।

ठकुरानी : वह रक्त क्या था ? ठकुरानी मैं हूं। जिन हाथों ने बनाया, उन्हें ही तोड़कर बने रहने का स्वप्न मिथ्या है। इस हिंसा से जो मरा है, वह हमी हैं। हमसे बाहर कहीं कुछ नहीं है। उसी के हम अंश हैं।

उत्तमा : जिस बंदूक को अपनी शक्ति मानते हो, वह हमारा ही दान था। अब वही दान तुम्हें सुख की नींद नहीं सोने देगा।

ठाकुरानी : क्षमा करो, हे यशोदानंदन ! मुरली मनोहर, हमें क्षमा

करो। हे सीतापति राम। हे करुणापति···।

ठाकुर : ईश्वर की रक्षा करना मेरा धर्म था।

उत्तमा : अब तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ?

ठाकुर : मैं सुरक्षित हूं अपने बल से।

उत्तमा : वह बल हमी थे।

ठाकुर : मैं इस गांव को समूल नाश करके छोड़ूंगा।

ठकुरानी : रावण का अहंकार याद है?

[सन्नाटा]

उत्तमा : लो सम्हालो अपनी बंदूक, अपनी इस मातृभूमि का किसी के हाथ नाश नहीं होने देना चाहता।

चौथा दृश्य

[एक ओर से गोपी और उत्तमा, दूसरी ओर से पुजारी आकर]

पुजारी : सो ऐसा है रे कि प्रारब्ध बड़ा बली होता है। आज तेरा मुंह बड़ा चिक्कन लग रहा है।

गोपी : खाय खाय के मोटाय गए हैं।

पुजारी : ठीक पकड़ा। निमित्त ऐसा है। शुभस्य शीघ्रम्। गांव-गढ़ी की हालत का पता होगा। आजकल धर्म नहीं रहा। इधर भारत माता की जय, उधर राजा राजा राजा राम। खीर बनाएंगे महात्मा गांधी के नाम का, खार डाल देंगे उसमें न जाने किस काम का। पर मैं क्या किसी से डरता हूं। अभी खोदने बैठूं तो सात पुश्त की खोद डालूं। मैं क्यों डरूं ? मैंने पंचानन बाबा से कह दिया···देखो खबरदार, जबान सम्हाल-कर बात करो। नहीं तो जीभ गल जाएगी। धर्म नहीं सहेगा रे यह झूठ।

उत्तमा : कुछ साफ साफ भी तो कहो।

पुजारी : जो भी हो, वे मालिक हैं। किसने नहीं खाया नमक उनका ?

अरे लोगो ! तुम्हारे दांतों में अभी भी लगा होगा उनका दाना ! अरे वंशनाश के समय कलमुहां जनमते हैं। हाथी मरे तो भी नौ लाख का। बोल ना, क्या नहीं होता ? कल के छोकरे, धौल जमाने की बात कहते हैं। ससुरों का वंश डूबेगा, हां।

गोपी : तोहार वंश फूले, यही ना। तोहरे पेट मा दांत है। इधर कलह लगाइ देंगे। उधर चिकोटी काटि लेंगे। मानो कपार मा पित्त बढ़ गया है।

पुजारी : जथा राजा तथा प्रजा। मतलब यह कि पातंजल योग के तीसरे अध्याय के अठारवें श्लोक में कहा गया है कि पूर्वजन्म का ज्ञान होता है।

उत्तमा : बैठिए। मैं यह समझना चाहता हूं।

पुजारी : राज दरबार में आओ। सत्संग करो। एक से एक विद्वान, योगी, पंडित आते हैं राजा ठाकुर के पास।

उत्तमा : पर इस श्रेष्ठ दर्शन का असर क्यों नहीं होता ? एक सिर्फ धर्म के नाम पर होंठ हिलाता है, दूसरा धर्म को पाठ मानकर मन बहलाता है।

पुजारी : अब मुझे विलम्ब हो रहा है। ठाकुर जी की संध्या आरती का समय हो गया है। आओ ना, सारा नैराश्य दूर हो जाएगा—मंदिर में श्रीमद्भागवत की कथा बैठी हुई है।

उत्तमा : आपने अभी ज्ञान की बात कही थी।

पुजारी : देखो, मैं अपने चित्त की शांति को नष्ट नहीं करता।

उत्तमा : चित्त की शांति ?

पुजारी : सब का सार तत्त्व यही, राजा नहीं, तो प्रजा नहीं। **(जाते हुए)** शुभस्य शीघ्रम्। शुभस्य शीघ्रम्। नमो नारायण !

[चला जाता है। उत्तमा शून्य में देखता रह जाता है]

उत्तमा : जो है उसे किसने बनाया है ?

गोपी : भगवान ने।

उत्तमा : भगवान को किसने बनाया ?

गोपा : भगवान ने।

उत्तमा : मतलब खुद कोई अपने को बना सकता है। यही बात —।

गोपी : हे राम, मैंने यह थोड़े ही कहा। भगवान बना सकता है। आदमी थोड़े, हां।

[माटी आती है।]

गोपी : हे रे, तू इहां का कर रही है ?

माटी : हे भइया, सिपाही अपने पीछे लगे हैं। **(गोपी से)** हे रे, तू हवेली में जाती काहे नाहीं। बता, अपने मरद को बचाएगी या अपने को ? आग बुझाएगी या लगाएगी ?

गोपी : लड़ूंगी, जान दे दूंगी।

उत्तमा : गोपी !

माटी : ठाकुर चाहेंगे तो बीपत को पुलिस छोड़ देगी।

उत्तमा : ठाकुर कैसे चाहेंगे ?

माटी : उपाय है। समझदारी से बिगड़ा काम बनता है।

गोपी : बड़ी आई है बनाने।

माटी : मेरी बात मानेगी या नहीं ? बोल !

गोपी : नहीं।

माटी : का ?

गोपी : नहीं, नहीं, नहीं।

[माटी उसे पकड़ना चाहती है। वह भाग कर निकल जाती है।]

माटी : राजा ठाकुर का परताप मामूली नाही। कप्तान की मेम आई थी हवेली में। सुना है तीन खून माफ हो गया है ठाकुर का। भइया हो, मेरी मानो, गांव छोड़कर कहीं दूर मुलुक में जाए छिपो। अपनी जिन्दगानी नहीं तो कुछ नहीं। **(सहसा)** हाय दइया, ठकुरानी की पालकी आय रही है।

[भागती है। ठकुरानी आती है।]

उत्तमा : ठकुरानी को प्रणाम।

ठकुरानी : प्रणाम।

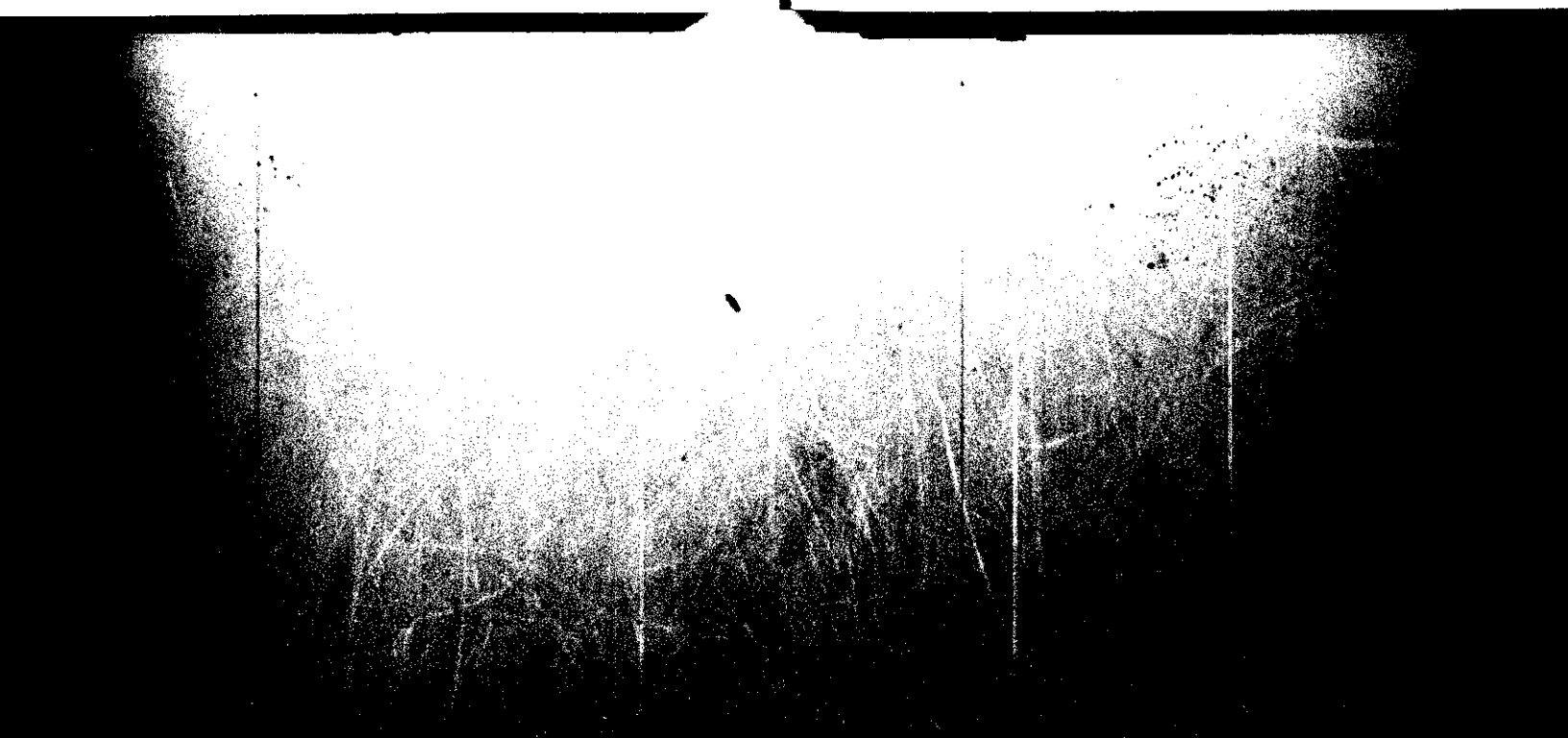

उत्तमा : कहां, कैसे बैठाऊं ?

ठकुरानी : बैठने आई नहीं। हठी भवानी के सगरा जाने के बहाने कुछ कहने आई हूं। हठी भवानी कभी नहीं गए होगे न ? गंधक की गंध आती है सगरा से। मंदिर न जाने किस जुग का है। मदार, चकबड़, अड़ूसा के झुरमुटों में ऊंची-नीची होती हुई जमीन में झाड़-झंखाड़ के नीचे वह हठी भवानी का मंदिर सोया पड़ा है। उसकी अंगनाई में मधुमालती और कनेर के पेड़ भरे हैं।

उत्तमा : क्या कहना चाह रही हैं ?

ठकुरानी : क्या ऐसा लगता है, मैं कुछ कहना चाह रही हूं ? फिर तो चुपचाप यहां से चल देना चाहिए।

उत्तमा : क्षमा हो। कहिए।

ठकुरानी : पर क्या ?

उत्तमा : जो आप बोल रही थीं।

[विराम]

ठकुरानी : यहां की औरतों ने बताया। मैं दो बार वहां हो आई हूं। मंदिर की झाड़ी के किनारे छिछले पानी के कीचड़ में, सप्तमी के दिन, आंख मूंदकर टटोलने से जो मिले, उसे पेट में डाल लो। संतान अवश्य होगी। छोटी मछली, घोंघा, सेवार, घिइउनी, कीचड़, माटी, जो हाथ लगे, निगल जाव। कितना जी कड़ा किया, निगल नहीं पाई। जब औरों को देखती हूं, जो आया हाथ में, निगलते हुए, तब सोचती हूं, मैं भी वैसी स्त्री क्यों न हुई।

उत्तमा : वह अधविश्वास है। जहालत है। आपने कहीं ऐसा किया तो···

ठकुरानी : मर जाऊंगी। भीतर मेरे जहर फैल जाएगा। तो उनके भीतर जहर क्यों नहीं फैलता ? बिना निगले मेरे भीतर जहर क्यों फैला है ?

[सन्नाटा छा गया है।]

ठकुरानी : हठी भवानी का सगरा, वह टूटा मंदिर, वह कीचड़ बावली, वह भवानी टोटका, किसने बनाया ? किसी हठी राजा-रानी ने बनाया होगा। वह सब टूट कर भी अब तक क्यों नहीं मिटा ? क्योंकि वही सत्य है।

उत्तमा : वह अंधविश्वास है।

ठकुरानी : शब्दों के बाण मत चलाओ। आओ चलो मेरे साथ। तुम्हारे केश में सगरा की- झाड़ी से नाग केसर खोंस दूंगी, तुम्हें कभी, सिरदर्द नहीं होगा। सगरा की काई माथे पर चपोड़ दूंगी, डरावने सपने नहीं आएंगे। बकुटेश्वर के टीले पर गिरा हुआ, नीलकंठ पंख तुम्हारी कमर से लटका दूंगी, हाथ पीले हो जाएंगे **(हंस पड़ती है)** बोलो, बताओ मुझे। यह पेड़ अपनी जगह स्थिर आकाश में बढ़ा है। सूर्य की ओर अपलक ताक रहा है, सबको सुगंधि और फल दे रहा है—यह पेड़ का विश्वास है या अंधविश्वास ?

उत्तमा : पेड़ केवल वृक्ष है।

ठकुरानी : **(हंस रही है)** जिस आकाश में उड़ना चाहती हूं उसे अधूरा ही जानती हूं। वह जानना भी हमेशा संदेह से भरा रहता है।

उत्तमा : बचपन में तीन दिन भीख मांगता था, तीन दिन पाठशाला पढ़ने जाता, कुछ ही बड़ा हुआ तो पुरोहिती करने लगा—बारह वर्ष का मैं, मंत्र पढ़ता हुआ शादी कराता। पूजा, संस्कार, कर्मकांड कराता। एक दिन सोचने लगा—यह जो मैं करा रहा हूं, वह क्या है ? जो मंत्र पढ़ रहा हूं उसका अर्थ क्या है ? जो संस्कार दे रहा हूं उसका प्रयोजन क्या है ? **(रुककर)** जिस धरती पर गिरा हूं, उसे जानता हूं तभी गिरने की इतनी चोट लगती है।

ठकुरानी : अपने शत्रु को जानते हो ? मतलब मेरे पति राजा ठाकुर को ?

उत्तमा : जानता हूं।

ठकुरानी : यही कहने आई हूं, नहीं जानते। इन गांव वालों को जानते हो ?

उत्तमा : जन्म से इन्हीं के साथ रहा हूं।

ठकुरानी : अपने समय, अपनी जमीन को जानते हो ? जो इन चीजों को जानता है, इनका 'होता' भी है, वही लड़ता है, आजादी की लड़ाई। वही होता है आजाद। (**रुककर**) केवल तुम्हीं से कहने आई हूं—यहां कोई आजादी की लड़ाई नहीं लड़ रहा, सब राजा ठाकुर से लड़ रहे हैं।

उत्तमा : ठकुरानी !

ठकुरानी : आजादी आएगी। हमें स्वतंत्रता मिलेगी पर जब तक हम अपनी धरती, अपने समय, अपने आप के नहीं हैं, हम आजाद होकर भी गुलाम रहेंगे।···आज हठी भवानी के उस कीचड़ में जो कुछ भी मिलेगा, मैं निगल लूंगी।

[उत्तमा रास्ता रोक लेता है।]

उत्तमा : कमल कीचड़ में फूलता है, पर इसके माने यह नहीं कि हम कीचड़ खाएं। कीचड़ है, तभी हम सूर्य की ओर ताकते हैं, जिसके संस्पर्श से कमल खिलता है।

ठकुरानी : यह अनुभव नहीं, सिर्फ कहने की बात है।

[विराम]

उत्तमा : अनुभव क्यों नहीं होता ?

ठकुरानी : प्रेम नहीं है।

उत्तमा : प्रेम क्या ?

ठकुरानी : जो है, पहले उसी को जीना, बिना किसी शर्त के।

[जाने लगती है।]

उत्तमा : आज मैं आपके संग चलूंगा हठी भवानी के सगरा।

ठकुरानी : अब मैं हवेली लौट जाऊंगी (**जाते जाते**) सुनो। देखो। वह ठाकुर जी का मंदिर देख रहे हो न, उसका वह शिखर क्या कहता है ? देवता के गुलाम बनो ? राजा है तो प्रजा बनो ? नहीं, सब अपने स्वामी बनें। सब अपने देवता हों। तुम सदा

अपने साथ रहना। मुरली मनोहर का हाथ तुम्हारे माथे पर है। जो कुछ मेरा पुण्य है, तुम्हारा ही है।

[ठकुरानी चली जाती है। उत्तमा देखता रह जाता है।]

पांचवां दृश्य

[संध्या समय। गांव के लोग एक झुंड में चुप, उदास निसहाय बैठे हैं। उत्तमा आता है। देखता रह जाता है।]

उत्तमा : हे पंचो। हे भाई हो ! कुछ बोलो तो सही। हे, ऐसे क्यों बैठे हो हाथ पै हाथ धरे ! बोलो। पंचानन बाबा जेल में उपवास किये हैं हम सब उपवास व्रत रखेंगे।

पंचम : जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी।

उत्तमा : बोलो भारत माता की जै।

गंगाजली : अजगर करे न चाकरी, पंछी करै न काम, दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।

उत्तमा : अपनी आवाज में बोलो। दूसरों की रटी रटाई बातें क्यों बोलते हो ?

बाकुल : हे भाई, जेहि विधि राखे राम, तेहि विधि रहिए।

उत्तमा : पुलिस थाने में बीपत की लाश पड़ी है, चलो उसे ले आना है। उठो। बीपत शहीद हुआ है। बोलो बीपत जिन्दाबाद ! बोलो···।

जगमग : तुलसी जस भवतव्यता तैसी मिले सहाय, आपु न आवै ताहि पे, ताहि तहां लेइ जाय।

उत्तमा : आह ! बस इसी तरह बड़बड़ाते रहोगे। बीपत शहीद हो गया, सुना नहीं ?

पंचम : प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।

कन्हाई : अब सुधि लेव मुरारी विपत्ति बड़ भारी।

उत्तमा : ठकुरानी को हवेली में ठाकुर ने कैद कर रखा है। चलो, ठकुरानी के लिए आवाज उठाएं।

एक आदमी : रहना नहि देस बिराना है। ई संसार कागज की पुड़िया, पानी लगे गलि जाना है···।

[उत्तमा लोगों को देखता ही रह जाता है।]

उत्तमा : (**मानो चीख पड़ता है**) बहुत हो चुका। अब ऐसे नहीं चलेगा।

पंचम : सब ईश्वर की लीला है।

कन्हाई : उसके बिना एक पात नहीं हिलता।

बाकुल : सब उसी का खेल है।

[लोग सिर झुकाए बैठे हैं। उत्तमा चुप खड़ा है।]

छठा दृश्य

[एक अंधेरी रात। गांव की स्त्रियां उदास बैठी हैं। सबके सामने एक-एक चिराग जल रहा है। गोपी निःशब्द रो रही है। औरतें करुण स्वर में गा रही हैं।]

ओरे लछिमन देवरा, विपत्तिया के नायक
देवरा भइया के लावहु मनाय
नाही तो विष खाबैं।
अरेरे भौजी सितल ठकुराइन
देहू ना तिरिया कमनिया मैं भइया खोजे जइहों।

[उत्तमा आकर सिर झुकाए खड़ा रह जाता है। गोपी हाहाकार कर उत्तमा के पैरों पर गिरती है। उत्तमा उसे उठाता है। सारी स्त्रियां रो रही हैं।]

सातवां दृश्य

[दिन का समय। ठाकुर की हवेली के सामने गांव के कुछ स्त्री-पुरुष]

उत्तमा : भारत माता की···

सब : जै!

[वीरसिंह के साथ हाथ में बंदूक लिये मानो नशे में ठाकुर तेजी से आता है।]

ठाकुर : चले जाओ यहां से। या चुपचाप बैठ जाओ।

वीरसिंह : जबान बन्द!

ठाकुर : आवाज निकली नहीं कि इधर से बंदूक की गोली निकलेगी।

उत्तमा : चलाओ गोली। भारत माता की जै। ठकुरानी को कैद से बाहर निकालो।

गंगाजली : हमें उनके दर्शन कराओ।

ठाकुर : हमारे दर्शन में क्या कोई कमी है?

[ठाकुर के साथ वीरसिंह हंसता है।]

गोपी : जुल्मी! हत्यारे!

ठाकुर : अभी कल तक मैं धर्मात्मा था···।

उत्तमा : जवाब दो, हमारी ठकुरानी कहां है?

ठाकुर : जाओ। हवेली में ढूंढ़ो। ढूंढ़ो जाकर। हम तो खुद अपनी ठकुरानी के दर्शनों के लिए बेताब हैं। लाजवाब हैं। (**हंसता है।**) बोल! जेल जाना चाहता है या शहीद होना चाहता है? दोनों का इंतजाम मेरे पास है। हम खुद अब अंगरेज बहादुर हैं। क्या समझे? तुझ पर केस चलाकर यह साबित करा दूंगा कि बांपत की हत्या तेरे हाथों हुई है।

गोपी : भगवान तेरे सिर पे वज्र गिरावै। तेरा नाश हो।

शेख मौला : पाप का घड़ा इतना मत भरो ठाकुर कि सब कुछ बह जाए। आखिर जुल्म की भी एक हद होती है।

ठाकुर : ओह शेख मौला, आप भी इन बेवकूफों में शरीक हो गए। तौबा तौबा! सुनिए, पाकिस्तान बनेगा। आपको इन हिन्दुओं

से क्या लेना देना। आप हमारा साथ दीजिए।

शेख मौला : आपका खेल हम समझ गए। हमें बांट कर आजादी की लड़ाई को तोड़ना चाहते हो। हममें मजहबी आग भड़का कर अपना राज कायम रखना चाहते हो। यह अब हरगिज नहीं होगा।

ठाकुर : अंगरेज यहां रहेगा। हम यहां रहेंगे।

उत्तमा : अंगरेज यहां से जाएगा। पीछे राजा-जमींदार भागेगा।

ठाकुर : गुलाम करेगा राज ?

उत्तमा : स्वतंत्र भारत करेगा।

[ठाकुर ठहाका मारकर हंसता है। अचानक कहीं से ठकुरानी के कंठ से वंदेमातरम् का गीत सुनाई पड़ता है। वह चुप हो जाता है।]

उत्तमा : ठकुरानी !

ठाकुर : मुंह पर पट्टी बांध कर, दोनों हाथ पीठ पीछे कस कर कमरे में डाल दो।

[पुजारी आकर खड़ा रह जाता है।]

ठाकुर : जाओ, देखते क्या हो ?

पुजारी : दुहाई सरकार की। आज इस घड़ी राहु दोष है। क्षणदा एकादशी के छठे ग्रह पर मंगल का दोष।

ठाकुर : चुप रहो। यह कुछ नहीं मानता। यह सब प्रजा के लिए है। राजा विधाता है। वह शास्त्र बनवाता है। ज्योतिष लिखवाता है।

पुजारी : मंगलम् भगवान विष्णु।

ठाकुर : इस आवाज को बन्द करो, जाओ।

बीरसिंह : क्षमा हो मालिक, चितौनी के बाबुओं का नमक खाया है। ठकुरानी के अंग पर हाथ नहीं लगा सकता।

ठाकुर : नमकहराम !

[बंदूक उठाए क्रोध से एक-एक का चेहरा देखता है। ठकुरानी के वंदेमातरम् के स्वर शून्य में कौंध रहे हैं।]

आठवां दृश्य

बाबा : भारत आजाद हुआ। मैं जेल से छूट कर अपने इसी गांव आया। देखा उत्तमा पर कत्ल, डाके के झूठे इलजाम साबित कर ठाकुर ने उसे कैद दिलवाया। इस गांव के तीन तो सदा के लिए चले गए। एक तो शहीद हुआ वही बीपत। पीठ पर न जाने कितने बेंत पड़े, पर आखिरी सांस तक यही कहता रहा—भारत माता की जै। दूसरे गए शेख मौला। सत्याग्रह में जेल गए। जेल से लौटे फिर खादी की गठरी पीठ पर लादी और फिर जेल गए। जब जब गांधी उपवास करते, वह भी करते। तीसरी बार जेल से लौटे तो पता नहीं क्या रोग लेकर आए कि छाती में दरद रहने लगा। मीठा मीठा बुखार। शेख थे पर रहते थे चमरटोलिया में, झोपड़ी डाल कर ! कहते—जब राष्ट्रपिता बापू हरिजन बस्ती में रहते हैं तो हम क्यों अलग रहें ? झोपड़ी में रक्त की उल्टियां करते-करते मर गए। और एक बचा दामोदर सिंह। सबसे बड़का किसान घर जल गया। खेती कुड़क हो गई। जिस दिन गांधी की हत्या हुई, उसी दिन, सरजो नदी की धार में कूद कर प्राण तज दिया। गांधी विहीन भारत में कैसे रहूंगा ! **(रुककर)** पर अवधपुर गांव में असली घटना उस दिन घटी, जिस दिन जमींदारी खत्म हुई।

नवां दृश्य

[ठाकुर मंदिर के बाहर—ठकुरानी, ठाकुर का पीछा करती आ रही है। रात का समय।]

ठकुरानी : नहीं नहीं, ऐसा मत करो।

ठाकुर : जब मैं नहीं, तो ठाकुर भगवान भी नहीं।

ठकुरानी : ऐसा मत बोलो।

ठाकुर : इस मंदिर के साथ मैं यहां सूरज की तरह उगा था, अब इसे तोड़ कर मुझे यहां से चले जाना है। शहर में मेरी कोठी बन रही है, ड्राइंगरूम में भगवान की ये मूर्तियां शोभा देंगी।

ठकुरानी : तुम्हारे लिए जो पत्थर की मूर्ति है हम सब के लिए वही साक्षात् भगवान हैं।

ठाकुर : जब तक यहां मेरा राज था, ठाकुर जी यह मेरे लिए ठाकुर थे। औरों के लिए भगवान थे। अब मेरा राज खत्म हुआ, ठाकुर मेरे लिए पत्थर हैं।

ठकुरानी : भगवान सदा तुम्हारे लिए पत्थर थे, तभी तुम्हारा राज खत्म हुआ।

ठाकुर : यह मंदिर मेरा है। यह भगवान मैंने दिया इन गंवाड़ियों को।

ठकुरानी : भगवान के द्वार पर झूठ मत बोलो। तुम जो कुछ हो इसी प्रजा के बनाए हो। जो प्रजा ने चाहा तुम वही हो।

ठाकुर : जो मैंने चाहा, वही हुआ।

ठकुरानी : नहीं। यह भ्रम है।

ठाकुर : आगे जो मैं चाहूंगा, वही होगा।

ठकुरानी : प्रजा ने नहीं चाहा, अंगरेज यहां नहीं रहे। प्रजा ने नहीं चाहा देखो तुम नहीं रहे।

ठाकुर : अगर मैं नहीं, तो ये भी नहीं रहेंगे। मैं ठाकुर जी को ले जाऊंगा यहां से। यहां जो कुछ बना मेरे कारण। मेरे पुण्य प्रताप से। जब मैं नहीं, तो यहां कुछ भी नहीं।

ठकुरानी : उस राक्षस की कहानी सुनी थी, जो अपना प्रान सात समुन्दर के बीच, जंगल में एक सुआ के रूप में सुरक्षित रखे था ?

ठाकुर : हट जाओ सामने से !

ठकुरानी : ठाकुर !

ठाकुर : यहां सब कुछ मेरा था।

ठकुरानी : पर अब कुछ नहीं है। उसी की स्मृति रहने दो।

ठाकुर : नहीं।

ठकुरानी : मंदिर प्रजा के खून पसीने से बना है। पत्थर की मूर्ति में भगवान की कल्पना इसी प्रजा की है। ईश्वर विश्वास था, तभी यह मंदिर बना। तभी तुम यहां के राजा बने। जिस दिन अंगरेजों से मिलकर स्वयं को भगवान समझने लगे, उसकी नाश-लीला शुरू हो गई।

ठाकुर : इसी का बदला लूंगा। हट जाओ मेरे सामने से !

ठकुरानी : कौन हो ? कौन हो तुम ?

ठाकुर : जिसे बनाया है, उसे बिगाड़ कर जाऊंगा। इनके विश्वास को ऐसे तोड़ूंगा कि उसके अंधविश्वास में सदा लड़ते मरते रहें।

ठकुरानी : इस मिट्टी में तुम जैसे न जाने कितने मिट कर धूल बन गए। हठी भवानी का सगरा, रंगनाथ का डीह, झाड़-झंखाड़ में छिपे असंख्य टीले, खंडहर, देवी-देवता, भूत-प्रेत, टोने-टोटके जिस सत्य के प्रमाण हैं, तुम नहीं जानते ठाकुर।

ठाकुर : (**बढ़ते हुए**) यही चाहता हूं, ये सब इसी सनातन अंधकार में डूबे रहें।

[जाता है। सामने पुजारी दिखता है।]

ठकुरानी : सनातन अंधकार नहीं, सावधान ! सनातन वह है जो कभी टूटता नहीं। कभी खत्म नहीं होता।

पुजारी : हे भगवान, आप ठाकुर जी की मूर्ति तोड़ेंगे ?

ठाकुर : अपने साथ ले जाऊंगा।

पुजारी : सत्यानाश होगा।

ठाकुर : हट जाओ।

[भीतर जाता है। ठकुरानी दौड़ती है। तोड़ने की आवाज होने लगती है।]

पुजारी : (**चिल्लाता हुआ**) दौड़ो। जागो। गोहार लगाओ, गोहार। ठाकुर मंदिर में राक्षस घुसा है। हमारे भगवान को तोड़े लिए

जा रहा है। दौड़ो ! जागो ! बचाओ !

[चारों ओर से गांव के स्त्री-पुरुष दौड़ते हैं। मंदिर में जाते हैं। बिलकुल टूटे हुए लौटते हैं।]

पुजारी : (**रो रहा है**) हमारे यशोदानंदन का पीताम्बर फाड़ डाला। मुरली मनोहर की बांसुरी तोड़ दी। हमारे राधारमन को···।

पंचम : कोई पूर्वजन्म का पाप था।

बाबा : **पंचो,** धीरज बांधो। भगवान सर्वव्यापी हैं। अजर हैं। अमर हैं।

पुजारी : दशरथनंदन का धनुष तोड़ डाला। जानकीनाथ का मुकुट धूल में मिला दिया।

बाबा : बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय···।

पुजारी : आगे शून्य है। आगे अंधकार है कहीं कुछ नहीं है। (**विक्षिप्त-सा जाता हुआ**) राम बिना सब सूना हो गया। (**गाता है**) माई रे बिनु राम अब ना अवध मा रहिबे। राम बिना मोरी सूनी अजोध्या लछिमन बिना ठकुराई, सीता बिन मोरी सूनी महलिया, के अब दियना जराई, माई रे !

[रो रहा है।]

पंचम : हमारे ठाकुर भगवान को कौन ले गया ?

गंगाजली : वही राजा ठाकुर। सब लुट गया।

[फिर वही दृश्य—काठ के घोड़े पर बैठा हुआ ठाकुर राजा आता है। उसके पीछे बंदूक लिए सिपाही। गांव के लोग गाते हैं।]

राजा राजा घोड़वा कुचौउलैं
छोड़वा कुचौइलैं
भागा, भागा यहि गांव से भागा
भागा यहि गांव से भागा।

बाबा : राजा के सिर कागा
भगवान को लेकर भागा
राजा के पेट में पाका,

भगवान पर डाला डाका
भागा देखो भागा भागा
ई गांव है बड़ा अभागा।

सब : राजा राजा घोड़वा कुचौउले
घोड़वा कुचौउले
भागा, भागा यहि गांव से भागा
लूट पाटि कै भागा
भागा यहि गांव से भागा
भगवान को लेकर भागा।

[दृश्य बदलता है।]

चौथा अंक

[पृष्ठभूमि में वही चुनाव का संगीत फिर उभरता है।]

जगमग : पंचायत चुनाव के वोट गिने जा रहे हैं।

कन्हाई : बाकुलसिंह और वीरसिंह अगुआई कर रहे हैं।

पंचम : वही होंगे सरपंच। और पंच भी चुने जाएंगे उन्हीं के लोग।

जगमग : भला जब यहां इतने नीचे इतना जोर जुलुम चलता है तो ऊपर कितना क्या होता होगा!

कन्हाई : बाकुलसिंह ने हरिजनों का एक भी वोट नहीं पड़ने दिया—हरिजन उनके खिलाफ थे।

जगमग : सुना है, उन सबों की ओर से फर्जी वोट डाल दिए गए।

पंचम : हम लोग मिलकर भी इस बेइमानी का विरोध नहीं कर सके—भला ऐसा क्यों?

[बाबा आते हैं।]

बाबा : सारी पंचायत बाकुल, वीरसिंह और उसके ही लोग जीत रहे हैं। उत्तमा की बात साबित हो गई। जिस व्यवस्था के तहद यह चुनाव है उसकी बुनियाद में वही हिंसा, दमन और लूट है जो अंगरेज और जमींदार यहां विरासत में दे गए हैं। उत्तमा सच कहता था, जो अधिकार ऊपर से यहां नीचे आएगा उसे जैसे भी हो ऊपर के ही लोग हथिया लेंगे।

पंचम : हम कुछ नहीं कर सकते?

बाबा : अरे, उत्तमा आ रहा है!

पंचम : हां, उत्तमा ही है।

जगमग : उत्तमा!

[उत्तमा आता है। बाबा के चरण छूता है—दोनों के अंक से लगता है।]

बाबा : अरे तू कहां था बेटा? वैसे हम तुमसे माफी के हकदार तो नहीं हैं, पर चलो तुमने हमें क्षमा कर दिया।

पंचम : बड़े दुर्दिन हैं तुम्हारे इस गांव पर।

जगमग : राजा ठाकुर के चले जाने के बाद जब तुम जेल से छूटकर आए थे, तब तुमने कहा था हम सब एक परिवार की तरह यहां एक साथ बैठकर सर्वसम्मत से पंच पुरुष चुन लें। और पंचपुरुष, परमेश्वर की एक मूरत बनाकर गांव के सूने मंदिर में स्थापित कर दें—पर बाबा के अलावा यह बात किसी की समझ में नहीं आई।

बाबा : देखो उसी का नतीजा यह चुनाव। एक लूट कर चला गया, अपने पीछे लुटेरों की एक जमात पैदा कर गया। (सहसा) अरे, तू चुप क्यों है? जैसे अब तक गांव के लोग मंदिर के उसी ठाकुर भगवान की याद करते हैं, वैसे तू भी उदास है।

उत्तमा : मैंने जो देखा उसे बताने आया हूं।

[सब पूछने लगते हैं।]

उत्तमा : शहर में ठाकुर सिंधुसिंह की नई कोठी ढूंढ़ता रहा—पता लगाया, चक्कर काटता रहा। एक दिन अचानक पा गया उनकी कोठी। ठाकुर मुझे नहीं पहचान पाए। ठकुरानी नहीं रहीं इस दुनिया में। मैं ठाकुर की आलीशान बैठक में गया। वहां देखा—राम और कृष्ण की दोनों मूर्तियां सजावट के सामान के साथ रखी हुई थीं।

बाबा : ठाकुर जी के दर्शन किए?

पंचम : कैसे हैं हमारे गोपाल कृष्ण?

जगमग : मेरे पतित पावन राम कैसे हैं?

[गांव के लोग दौड़े आते हैं।]

कन्हाई : कहां हैं मेरे मुरली मनोहर?

पुजारी : बताओ, हमारे ठाकुर जी को कौन भोग लगाता है ? उनकी आरती पूजा होती है न ! कैसे हैं हमारे प्राणवल्लभ ?

उत्तमा : ठाकुर राजा के लिए भगवान की वे मूर्तियां पत्थर थीं —पत्थर की मूरत। ठाकुर की कोठी में तुम्हारे भगवान खिलौने की तरह रखे हुए हैं।

पुजारी : चुप रहो—भगवान को खिलौना कहने वाले, जीभ कटकर गिर जाएगी, हां।

उत्तमा : यही तो मैं कहने आया हूं—चाहते हो अब कोई दूसरा ठाकुर आकर तुम्हें वही मूरत दे। भयभीत करके राज करे। हमें पशुओं की तरह हांके। और एक दिन हमारी कमर तोड़ने के लिए वही देवमूर्तियां उखाड़ कर लिए चला जाए !

पुजारी : खबरदार, ठाकुर जी के खिलाफ कुछ नहीं कहना।

उत्तमा : ओह ! यह बात है। आज समझ में आ गया। जो हमारा शोषक है, प्रताड़क, विनाशक, वही हमें महान, पुण्यात्मा, दयालु लगने लगता है। कोठी, राजमहल, देवालय, सेना-सिपाही, इतनी सारी चमक-दमक, तामझाम से हमारी आंखें चौंधिया देता है। धर्मशास्त्र, देवालय, भगवान के पीछे वह शत्रु अपना असली चेहरा छिपा लेता है।

पंचम : अब हम अच्छाई के लिए किसका मुंह देखें ?

जगमग : भगवान थे तो हमें डर था— अब हम किससे डरें ?

बाबा : जवाब दे उत्तमा !

उत्तमा : परतंत्रता के कारखाने में मशीन की तरह बने हुए हम—एक चालक के हाथ से छुट्टी मिली तो दूसरे चालक के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ेगा।

[विजयी बाकुल और वीरसिंह अपने चुने हुए लोगों के साथ आते हैं, हंसते, मोंछ पर ताव देते हुए। उत्तमा के साथ गांव के लोग एक तरफ खड़े रह जाते हैं।]

बाकुल : अरे उत्तमा आया है ! आओ भाई, आओ। कहां थे तुम अब-तक ? पता है—ये लोग पंच और मैं सरपंच चुना गया।

वीरसिंह : ग्राम पंचायत अब अपनी है।

बाकुल : अरे पहले आ जाते तो तुम्हें भी चुनाव में खड़ा कर जिता देते।

उत्तमा : मैं अपने पैरों पर अपने पंच पुरुषों की धरती पर खड़ा हूं—तुम लोग आसमान में उड़ रहे हो, सावधान !

बाकुल : चुप बे, बड़ा आया !

बाबा : बड़ा है—इसे हमने बड़ा माना।

पंचम : पंच पुरुष का चुनाव नहीं होता, वह पाया जाता है।

पुजारी : हमने इसे पाया।

उत्तमा : और हमने अपने आपको पाया !

बाबा : ये हैं हमारे पंच पुरुष। पंच पुरुष एक साथ बैठकर सोचें—जब शहर से कोई भी यहां आता है—चाहे वह राजा ठाकुर हो, चाहे यह चुनाव, हमारे यहां तब इतनी फूट, हिंसा और नफरत क्यों पैदा हो जाती है ? पंच पुरुष सोचें !

[परदा]

□□